सरल और आसान भाषा में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान
फ़ाज़िले बरेलवी के सम्पूर्ण परिवार पूर्वज एवं वंशज का
संक्षिप्त परिचय बनाम:

रज़वी परिवार का परिचय

लेखक

अब्दुर रहीम समर मिस्बाही

प्रकाशक

मर्कज़ फ़ज़्ले हक़ एकेडमी अंडमान

सरल और आसान भाषा में आला हज़रत इमाम **अहमद रज़ा ख़ान** फ़ाज़िले बरेलवी رحمۃ اللہ علیہ के सम्पूर्ण परिवार पूर्वज एवं वंशज का संक्षिप्त परिचय बनाम:

रज़वी परिवार का परिचय

लेखक

अब्दुर रहीम समर मिस्बाही

प्रकाशक

मर्कज़ फज़्ले हक़ एकेडमी अंडमान

पुस्तक : रज़वी परिवार का परिचय

लेखक : अब्दुर रहीम समर मिस्बाही

संशोधक : डा. मोहम्मद हुसैन मिस्बाही

संख्या : 1100

प्रकाशक : मर्कज़ फज़्ले हक़ एकेडमी अंडमान

संपर्क : *arsamarmisbahi@gmail.com*
+9779807896292
+919531840375

किताब मिलने के पते और संपर्क न.

मर्कज़ फज़्ले हक़ एकेडमी, मर्कज़ नगर, अंडमान
+919562279483
मदरसा ऐनुल हुदा दिलानीपुर, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान
+919932081415
चिश्तिया कुतुब ख़ाना जानकीनगर, जनकपुर, नेपाल
+9779807826900
हसन बस्त्रालय, क़ादरी चौक परडिया, नेपाल
+9779807669741
आज़ाद बूक स्टोर मधूबनी, बिहार
+919852682277

بسم الله الرحمن الرحيم

समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है उस महान व्यक्ति को जिसे दुनिया आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضي الله عنه के नाम से याद करती है !

अपने वालिदैन और असातिज़ा के नाम !

लेखक

समर मिस्बाही

विषय-सूची

अध्याय 1 : पूर्वज

31 - 43

अध्याय 2 : इमाम अहमद रज़ा ख़ान व बिरादरान 41 – 54

अध्याय 3: वंशज

58 – 80



दो शब्द

काला पानी की सज़ा के लिए प्रसिद्ध अंडमान निकोबार द्वीप समूह में मुसलमानों की अच्छी ख़ासी संख्या है। अल्लाह तआला के फज़ल व करम, रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की अता, बुज़ुर्गाने दीन खास कर अल्लामा फज़ले हक़ खैराबादी رحمۃ اللہ علیہ के फैज़ान और सुल्तानुल उलमा शैख़ अबूबकर अहमद मुस्लियार حفظہ اللہ की मेहनतों और कोशिशों से अधिकतर शाफई हनफी मुसलमान अहले सुन्नत व जमाअत के मानने वाले हैं।

अंडमान में दीन व धर्म और सुन्नत जमाअत के कामों के लिए सुल्तानुल उलमा शैख़ अबूबकर अहमद मुसलियार حفظہ اللہ के ज़ेरे सरपरस्ती बहुत से संगठन जैसे कि AMJ, SYS, SSF आदि चल रहे हैं और बहुत से मदरसे और मकातिब दीनी शिक्षा देने में लगे हैं। अंडमान में मर्कज़ुस सक़ाफतिस सुन्निया कालीकट केरल का मुख्य शाखा "मर्कज़ फज़्ले हक़ एकेडमी" है जिस की नींव 12-02-2006 में सुल्तानुल उलमा शैख़ अबूबकर अहमद حفظہ اللہ के पवित्र हाथ से पड़ी और जिस के अंतर्गत बहुत सारे हनफी शाफई मदरसे और मकातिब चल रहे हैं।

सुल्तानुल उलमा शैख़ अबूबकर अहमद मुसलियार حفظہ اللہ के आदेश पर अंडमान आए हुये मौलाना अब्दुर रहीम मिस्बाही उस्ताद नेपाल और उनके अहबाब मौलाना तौसीफ अलीमी बिहार, हाफिज़ मुईनुद्दीन साअदी उतर प्रदेश, मौलाना मुनीर सक़ाफी बंगाल आदि हज़रात अंडमान के भोले भाले मुसलमानों और हनफी भाइयों के बीच मेहनत, लगन और पूरी ज़िम्मेदारी के साथ दीन व सुन्नत के कामों में लगे हुये हैं।

मौलाना अब्दुर रहीम समर मिस्बाही एक क़ाबिल आलिमे दीन होने के साथ एक अच्छे लेखक भी हैं। इनकी कई किताबें छप चुकी हैं और कई अभी छपनी बाक़ी हैं। यह किताब “रज़वी परिवार का परिचय” जो अभी आप के हाथों में है, इन्हीं की मेहनतों और कोशिशों का नतीजा है।

अंडमान में आला हज़रत और मसलके आला हज़रत के विषय पर लिखी गई यह सर्वप्रथम पुस्तक है जिसको आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान के सौ साला उर्स के शुभ अवसर पर प्रकाशित करने की सआदत “मर्कज़ फज़्ले हक़ एकेडमी” को मिल रही है। अल हमदु लिल्लाहि अला ज़ालिक !

हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला मिस्बाही उस्ताद के इल्म, अमल और उम्र में बरकत दे और इस पुस्तक को ज़्यादा से ज़्यादा फायदामंद बनाए। आमीन !

इंजी. फाइरूज़ सक़ाफ़ी अज़हरी
प्रबंधक
मर्कज़ फज़्ले हक़ एकेडमी अंडमान
मर्कज़ नगर, कन्यापुरम, विमबरलीगंज
अंडमान & निकोबार द्वीप समूह
+919562279483

प्राक्कथन

यह अपने आप में आश्चर्य वाली बात है कि अंडमान में अहले सुन्नत व जमाअत की अच्छी बहुमत होने के बाद भी यहाँ के लोग आला हज़रत इमामा अहमद रज़ा ख़ान ﷺ के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते। इस के कई कारण हैं। एक तो यह कि यहाँ एक भी स्थानीय सुन्नी हनफी आलिमे दीन नहीं और नहीं यहाँ के लोगों को बाहर के सुन्नी हनफी आलिमे दीन से ज़्यादा संपर्क। पिछले कुछ वर्षों से सुल्तानुल उलमा शैख़ अबूबकर अहमद की मेहरबानी से यहाँ हम जैसे हनफी आलिमों को काम करने का अवसर मिल रहा है।

दूसरा कारण यह है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान की हयात और उनकी ख़िदमात पर जितना उर्दू भाषा में काम हुआ है हिन्दी भाषा में आटे में नमक के बराबर भी नहीं हुआ है। इस लिए ऐसे लोग जो उर्दू पढ़ना नहीं जानते आला हज़रत और उनके परिवार से बहुत ज़्यादा परिचित नहीं।

अंडमान के अधिकतर लोग उर्दू लिखना पढ़ना नहीं जानते। यह किताब "रज़वी परिवार का परिचय" आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ के सौ साला उर्स के हसीन मौक़ा से अंडमान और अंडमान जैसी जगह के लोगों के लिए लिखी गई है ताकि जो लोग उर्दू भाषा नहीं जानते वह भी आला हज़रत ﷺ और उनके सम्पूर्ण परिवार के बारे में अच्छी तरह जान ले।

इस पुस्तक को आप के हाथों तक पहुंचाने में जिन लोगों ने भी मेरी सहायता की है मैं उन सब का शुक्रिया अदा करता हूँ। विशेष रूप से मैं आभारी हूँ **डा. मोहम्मद हुसैन मिस्बाही** का कि उन्हों ने मेरे लिए अपना क़ीमती समय निकाला और पूरी पुस्तक को पढ़ कर जगह जगह शब्दों को फेरबदल करने और घटाने बढ़ाने की मुनासिब

सलाह दी । साथ ही मैं शुक्रिया अदा करना चाहूँगा हुसैनी बिरादरान **मौलाना अताउन्नबी हुसैनी मिस्बाही** और **मौलाना इज़्हारुन्नबी हुसैनी मिस्बाही** का कि जिन्होंने सहायक पुस्तक उपलब्ध करवा कर मेरी मदद फरमाई । इस ख़ुशी के अवसर पर मैं नहीं भूल सकता अपने मोहसीन शहज़ाद-ए-हुज़ूर फख़रे नेपाल हज़रत **मौलाना फज़्ले यज़दानी अमजदी** और **मौलाना रहमत अली रज़वी** साहब को जो समय समय पर मुझ नाचीज़ की हौसला अफ़ज़ाई फरमाते रहते हैं । साथ ही मुझे याद है **अज़ीज़म मोहम्मद रज़ा** सल्लमहु जो मेरे लिए अपना क़ीमती समय निकाल कर मेरी सहायता करते रहते हैं ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि जिन लोगों ने इस किताब की छपाई में हिस्सा लिया है उनको बेहतर से बेहतर बदला अता फरमाए और उनके नेक और जाइज़ इच्छा पूरी करे !

आमीन या रब्बल आलमीन !

अब्दुर रहीम समर मिस्बाही

मदरसा ऐनुल हुदा दिलानीपुर, पोर्ट ब्लेयर

अंडमान निकोबार द्वीपसमूह

21-10-2018 ई.



दुआइया कलिमात

मुफ़्ती-ए-आज़म नेपाल हज़रत अल्लामा मुफ़्ती
मोहम्मद इस्राइल रज़वी मिस्बाही
हुज़ूर फख़्रे नेपाल साहब क़िबला
दारुल उलूम क़ादरिया मिस्बाहुल मुस्लिमीन, अलीपट्टी शरीफ, नेपाल

हामी-ए-सुन्नत व अहले सुन्नत, माही-ए-शिर्क व बिदअत, शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन सैइदुना सरकारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान मोहद्दीस बरेलवी ﷺ की शख़्सियत अरब व अजम, हिल्ल व हरम में मोहताजे तआरुफ़ नहीं। आप के तजदीदी कारनामे और तसनीफ़ात व तालीफ़ात की बुनियाद पर पूरी दुनिया-ए-इस्लाम बख़ूबी आप को जानती और पहचानती है। आप जहाँ अपने वक़्त के बेमिसाल मोतबह्हिर आलिमे दीन थे वहीं आप एक पक्के सच्चे आशिक़े रसूल ﷺ भी थे आप के बयानात व फरमूदात से जहाँ इश्क़े मुस्तफा ﷺ की चमक महसूस की जाती थी वहीं आज भी उनकी तसनीफ़ात और नातिया कलाम से मोहब्बते रसूल ﷺ की शोआएँ फूटती नज़र आती हैं। सरकारे आला हज़रत की ज़ाते बाबरकात अपने ख़ानदान में तन्हा ही वली-ए-कामिल नहीं थे बल्कि आप के आबा व अजदाद भी अपने वक़्त के जैइद आलिमे दीन, साहिबे तसनीफ और बाकरामात वली-ए-कामिल थे और आप के औलाद व अमजाद भी इल्म के कोहे गेराँ, साहिबे तसनीफ और बाकरामात वली थे।

ज़ेरे नज़र किताब "रज़वी परिवार का परिचय" फ़ाज़िले गिरामी मौलाना अब्दुर रहीम समर मिस्बाही परड़ियावी की एक क़ाबिले क़दर तसनीफ है जो अपने अन्दर बहुत सी ख़ूबियों का

हामिल है । मौसूफ़ जज़ीरा अंडमान में रह कर अपनी गोनागों मसरूफ़ियत के बावजूद हिन्दी में अपनी तहरीर के ज़रिये सैइदुना सरकारे आला हज़रत ﷺ और उनके परिवार का तआरुफ़ पेश किया है । ताकि उर्दू से नावाक़िफ़ सिर्फ हिन्दी पढ़ने वाले हज़रात भी उनके परिवार से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो जाएँ । मौलाना मौसूफ़ एक बेहतरीन बासलाहियत आलिमे दीन, साहिबे क़लम, अच्छे ख़तीब, उम्दा फिक्र के मालिक और मिजाज़ में संजीदगी के हामिल हैं । और मूलके नेपाल से निकलने वाला मसलके आला हज़रत का तर्जुमान "सेह माही सुन्नी पैग़ाम नेपाल" के नाएब मुदीर भी हैं ।

दुआ है कि अल्लाह तबारक व तआला अपने हबीब मोहम्मद मुस्तफा ﷺ के सदक़े फ़ाज़िले गिरामी मौसूफ़ को मज़ीद क़लमी व लिसानी सलाहियत व क़ूवत अता फरमाए और इल्म व अमल में तरक़्क़ी बख़्शे !

آمین بجاہ سید المرسلین ﷺ

फ़क़ीर अबुल फज़्ल
मोहम्मद इस्राइल क़ादरी रज़वी बरकाती नूरी

ख़ादिमुत्तद्रीस वल इफ्ता :
दारुल उलूम क़ादरिया मिस्बाहुल मुस्लिमीन
अलीपट्टी, महोत्तरी नेपाल
2-10-2018 ई.

तक़रीज़

हज़रत मौलाना
डा॰ मोहम्मद हुसैन मिस्बाही

रिसर्च स्कॉलर विश्वविद्यालय दिल्ली ,, दिल्ली

इतिहास के पन्नों में नामवर एवं प्रसिद्ध हस्तियों काज़िक्र भरा पड़ा है। उन में कुछ ऐसे हैं जिन्हें उनके कुकर्मों की वजह से दुनिया याद करती है तो कुछ ऐसे हैं जिन्हें उनके अच्छे काम की वजह से ख्याति मिली। इस्लाम का पैग़ाम सर्वप्रथम हज़रत मोहम्मद ﷺ ने सऊदी अरब में (हिजाज़) छठी एवं सातवीं शताब्दी ईस्वी में पहुँचाया। उनके इंतेक़ाल के बाद उनके उत्तराधिकारी के रूप में सूफ़ी संतों एवं आलिमों ने दुनिया के हर हिस्से में इस्लाम का प्रचार प्रसार किया।

भारत में एक ज़माने तक वर्ण व्यवस्था के कारण समाज में भेद भाव और छुआ छूत जैसी अमानवीय प्रथा का चलन हो गया था ऐसे में सूफ़ी संतों के उदारवादी सहिष्णु और भेद भाव से परे रवैये ने , भारतवासियों को सूफियों की तरफ़ आकर्षित किया। भारत में दरी एवं अन्य सूफी पंथो ने उत्तर क़ा, चिश्ती, सोहरवर्दी,नक्शबंदी भारत से दक्षिण भारत तक और पूरब से पश्चिम तक इस्लाम का सन्देश पहुँचाया।

सूफ़ी संतों के अलावा इस्लाम धर्म की व्याख्या एवं शरीयत के द्वारा तय मानकों को सही सही बताने के लिए उलमा का वर्ग वजूद में आया। भारत में बहुत से उलमा हुए जिन्होंने शरीयत के विभिन्न विषयों पर अनेक किताबें लिखीं और फतवा दिया।इसके अलावा सामाजिक और राजनीतिक मामलोंइस्लाम के अनुसार में मुसलमानों को मज़हबे किया। चलने के लिए मार्गदर्शक का काम

भारत के महत्त्वपूर्ण आलिमों की सूची में से एक नाम मौलाना अहमद रज़ा खान का है। जिनको भारत पाक उपमहाद्वीप में- के उपनाम से ज़्यादा प्रसिद्धि प " आलाहज़रत"ाप्त हुई है । आलाहज़रत अब एक हस्ती का नाम मात्र नहीं है बल्कि ये एक विचारधारा की रूप अपना चूका है। यानि भारतपाक में अहले सुन्नत - जोड़ने में गर्व व जमात के अनुयायी आलाहज़रत के नाम से खुद को हैं। दर अस्ल अहले सुन्नत व जमात में सेंध मारने का महसूस करते कामकुछ लोगों ने किया था आलाहज़रत ने उन सेंध मार गिरोहों की पोल खोलने का काम किया । आला हज़रत चौदहवीं सदी हिजरी के एक महान विद्वान और सुधारवादी आलिमे दीन थे। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आलाहज़रत के परिवार में उनके अग्रज एवं पूर्वज भी एक से बढ़ कर एक आलिमे दीन और सुधारवादी थे ।

मेरे दोस्त मौलाना अब्दुर्रहीम मिस्बाही जो पिछले कई वर्षों से अंडमाननिकोबार द्वीपसमूह में इस्लाम के प्रचार प्रसार के काम में ज़रत के परिवार के एक बेहद खास हाल ही में जब आलाह .व्यस्त हैं का (अज़हरी मियाँ) आलिमे दीन मौलाना अखतर रज़ा खान इंतेक़ाल हो गया तो पूरी मुस्लिम दुनिया में शोक संवेदना की लहर चली सोशल मिडिया पर शोक का न थमने वाला सैलाब सा आगया , था उसी दरम्यान मौलाना अब्दुर्रहीम मिस्बाही से अंडमान निकोबार कौन हैं " अज़हरी मियाँ" सियों ने पूछना शुरू किया कि यहके वा जिनकी मौत पर मुस्लिम दुनियाा में ग़म का तूफ़ान आ गया है ? मौलाना ने मौखिक तौर पर उन लोगों को अज़हरी मियाँ की शख्सियत और आलाहज़रत का संक्षिप्त परिचय दिया लेकिन ज़वी परिवार से एहसास हुआ कि यहाँ के मुसलमानों को र यह उन्हें वाक़िफ़ कराना बेहद ज़रूरी है। मौलाना अब्दुर्रहीम मिस्बाही की इस सोच का नतीजा आपके हाथों में है। आलाहज़रत के परिवार के कई

आलिमों के जीवन के साथ उनके कारनामों को संक्षिप्त एवं सरल हिंदी भाषा में आपके समक्ष रख दिया है।

उम्मीद है कि यह किताब अंडमान निकोबार द्वीपसमूह के साथ भारत एवं नेपाल के अन्य भाग में बसे हिंदी भाषियों के लिए फायदेमंद साबित होगी। मेरी दुआ है कि मौलाना अब्दुर्रहीम मिस्बाही ऐसे ही अपनी मेहनत और क़ाबिलियत से इस्लाम का प्रचार व् प्रसार करें। अल्लाह उनके इल्म में बरकतें अता फरमाए। आमीन

मो० हुसैन मिस्बाही
रिसर्च स्कॉलर विश्वविद्यालय दिल्ली,
दिल्ली



तक़रीज़

हज़रत मौलाना
मोहम्मद अताउन्नबी हुसैनी मिस्बाही

एडिटर सेह माही सुन्नी पैग़ाम नेपाल

रज़ा और खानवाद-ए-रज़ा वह चमकता दमकता नाम है जिसे सुन कर अहले दिल और अहले होश व खिरद के चेहरे खिल उठते हैं। क्यूँ ना हो कि इस खानवादे ने अपने ज़ाती मफाद और नाम व नुमूद के लिए कुछ नहीं किया बल्कि जो कुछ किया दीन की सरबुलंदी, मज़हब व मसलक की तरवीज व इशाअत और तहफ़्फ़ुज़े शाने अलूहियत व तहफ़्फ़ुज़े नामूसे रिसालत के लिए किया। यही वह अनमिट कारनामे हैं जिनके सबब बरेली में आबाद यह खानवादा ना सिर्फ बरेली, ना सिर्फ यूपी ना सिर्फ हिंदुस्तान व पाकिस्तान बल्कि पूरे बर्रे सग़ीर में मशहूर व मारूफ़ है और अहले दिल व अहले ईमान इस खानवादा का तज़किरा अपने लिए सआदते उखरवी समझता है। उन्हीं अहले दिल व अहले ईमान से मूलके नेपाल और गुलश्ने ज़ाहिदी के एक महकते फूल, देखने में नौजवान लेकिन यक़ीने मोहकम व अमले पैहम का जामे, निहायत मोतहर्रिक व फआल शख्सियत मुहिब्बे मोहतरम मौलाना अब्दुर रहीम समर मिस्बाही साहब क़िबला हैं जो इस वक़्त ख़िदमते दीने मतीन की ग़रज़ से ग़रीबुल वतन हो कर मुअल्लिमे राबे सरखीले मुजाहिदे तहरीके आज़ादी अल्लामा फज़्ले हक़ ख़ैराबादी ﷫ के दयार "जज़ीरा अंडमान" में क़याम पज़ीर हैं और यहाँ रह कर रज़ा और ख़ानवादा का उसअत भर तआरुफ़ पेश करते रहते हैं। इसी की एक कड़ी किताब "रजवी परिवार का परिचय" है जिसे उन्हों ने मेहनत व कोशिश और तलाश व जुस्तजू से

अंडमान के बाशिंदों के लिए ख़ुसूसन और तमाम अहले ईमान के लिए उमूमन मआरिज़े तहरीर में लाया है। इस में मौसूफ़ ने इस परिवार के मोरिसे आला सईदुल्लाह ख़ान मरहूम से लेकर हुज़ूर ताजुश्शरिया तक खानवादे के कई हस्तियों का ज़िक्र किया है।

यक़ीनन मौसूफ़ का यह कारनामा क़ाबिले मोबारक बाद है कि उन्हों ने हिन्दी ज़बान में रज़ा और ख़ानवादे रज़ा का तआरुफ़ लिख कर ऐसे तबक़े में भी इस अज़ीम ख़ानवादा के तआरुफ़ का सामान फराहम कर दिया है जिन तबक़े में बहुत कम इस ख़ानवादे का तआरुफ़ हो सका है।

मौला तआला की बारगाह में ब'सद आजिज़ी यह दुआ है कि इस किताब को अपने हबीब ﷺ और बुज़ुर्गाने दीन رحمہم اللہ के सदक़ा व तुफ़ैल मुफ़ीदे आम व मक़बूले अनाम बनाए और मौसूफ़ को मज़ीद ख़िदमते दीनी की तौफ़ीक़ मरहमत फरमाए।

آمین بجاه النبی الکریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم وعلی آله الطیبین و اصحابه الطاهرین رضی اللہ عنہم

<u>बन्दा हक़ीर</u>

मोहम्मद अताउन्नबी हुसैनी मिस्बाही

ख़ादिम जामियतुल मदीना, बरेली शरीफ

संपादक सेह माही सुन्नी पैग़ाम नेपाल

तक़रीज़

हज़रत मौलाना
मोहम्मद इज़्हारुन्नबी हुसैनी मिस्बाही

उस्ताद जामिया अशरफ़िया, मोबारकपुर आज़मगढ़

तक़रीबन तमाम अक़्वाम का यह महमूद तरीक़ा रहा है कि वह अपने असलाफ़ और उनके कारनामों की याद मनाती हैं और आने वाली नस्लों के लिए उन्हें महफ़ूज़ भी रखती है। अहले सुन्नत व जमाअत में असलाफ़ और उनके कारनामों को याद रखने और उनकी याद मनाने का जो तरीक़ा राइज है वह आम तौर पर दो हैं :

पहला यह कि हर साल उनका उर्स के मौक़ा पर उनके हालात व सवानेह और कारनामे व करामात व दीगर ज़रूरी बातें बयान कर दी जाती हैं। दूसरा यह कि तहरीर व तसनीफ के ज़रिये उनके हालात और कारनामों को सफ़हात के सीने में महफ़ूज़ कर दिया जाता है।

रवां सदी और साले रवां जिसे "रज़ा सदी" और साले रज़ा" के नाम से हम ताबीर कर सकते हैं, उर्से आला हज़रत के सौ साल पूरे हो रहे हैं। इस मौक़ा पर इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी رحمۃ اللہ علیہ के मोतक़िदीन व मोतवस्सिलीन ने यह इरादा बनाया है कि इस सौ साला उर्से रज़वी को यादगार बनाया जाए और यादगार बनाने के लिए हर एक गोशे और हर एक मुल्क में कुछ ना कुछ तक़्रीबात और कुछ ना कुछ अहम और नुमायां काम सामने लाया जाये।

मूलके नेपाल ने भी इस जानिब पेश क़दमी की और आला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ के हवाले से अपनी ख़िदमात पेश करने की कोशिश की। उन्हीं कोशिशों में से एक मोतहर्रिक व फआल ज़ेहनीयत के मालिक सेह माही सुन्नी पैग़ाम के नाएब एडिटर नौजवान आलिमे दीन हज़रत

मौलाना अब्दुर रहीम समर मिस्बाही साहब की यह तालीफ है । किताब का नाम "रज़वी परिवार का परिचय" है । समर मिस्बाही साहब ने इस में सईदुल्लाह ख़ान से ताजुश्शरिया رحمۃ اللہ علیہ तक तक़रीबन चौदह अकाबिरे ख़ानवादे रज़विया का ज़िक्र फरमाया है । यह रिसाला अगरचे मुख़तसर है मगर अपने अंदर एक जामईयत लिए हुये है और तक़रीबन तमाम शख़्शियात की ज़िंदगी और कारनामों कि ज़रूरी गोशे को अपने अंदर सिमोए हुये है ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हम अहले सुनन को फैज़ाने रज़ा से माला माल फरमाए, हज़रत मुअल्लिफ की इस कोशिश को क़ुबूल फरमाए, इस किताब को क़ुबूलियते आम्मा नसीब फरमाए और उम्मते मुस्लिमा को ख़ुसूसन उर्दू से इस्तीफ़ादा की क़ाबलियत ना रखने वाले हज़रात के लिए इसे मालूमात का ख़ज़ीना बनाए !

آمین بجاہ سید المرسلین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

<u>**बन्दा फ़क़ीर**</u>

मोहम्मद इज़हारुन्नबी हुसैनी मिस्बाही

ख़ादिमुत्तद्रीस

जामिया अशरफिया, मोबारकपुर आज़मगढ़

21-01-1440 हि. \ 02-10-2018 ई.

प्रस्तावना

रज़वी परिवार

पृथ्वी पर जितने मानव जाति हैं सब के सब सिर्फ एक पिता हज़रत आदम ﷺ की संतान हैं। जब इस संसार में जनसंख्या बहुत ज़्यादा हो गई तो अल्लाह तआला ने इंसानों को क़बीलों और परिवारों में बाँट दिया ताकि लोग एक दूसरे से पहचान और मेलजोल बनाए रखें। हिंदुस्तान में अलग अलग धर्म, जाति एवं सांस्कृति के बहुत से समुदाय रहते हैं और अलग अलग नामों से जाने जाते हैं।

सदियों में कोई ऐसा महापुरुष जन्म लेता है जो मानवता, इंसानियत और समाज की बेहतरी के लिए पूरे मन और लगन से ख़ुद को समर्पित कर देता है। और कभी कभी ऐसा भी होता है कि एक व्यक्ति के बजाए उस व्यक्ति के पूरे परिवार में नस्ल दर नस्ल ऐसे लोग जन्म लेते रहते हैं, और उस परिवार से धर्म, समाज, मानवता एवं देश की बेहतरी के लिए समर्पित लोगों का सिलसिला जारी रहता है। ऐसे ही एक महत्वाकांक्षी परिवार में से भारत की धरती पर एक परिवार "रज़वी परिवार" है। जिसमें एक से एक महापुरुष हुए जिन्होंने विशेष रूप से भारत के मुसलमानों के लिए कठिन परिस्थितियों में भी निस्वार्थ हो कर मार्गदर्शन का काम किया। इस परिवार में जिनको सबसे ज़्यादा प्रसिद्धि एवं ख्याति प्राप्त हुई वह हैं "इमाम अहमद रज़ा ख़ान" जिन्हें आला हज़रत के नाम से लोकप्रियता मिली है।

आला हज़रत का नाम "अहमद रज़ा ख़ान" और आप के दादा का नाम "रज़ा अली ख़ान" था इसी कारण आप के परिवार को "रज़वी परिवार" कहा जाता है और आप के सिलसिले से जुड़े लोग "रज़वी" लिखते हैं। आलमे इस्लाम पर इस परिवार का बहुत बड़ा एहसान है।

अल्लाह तआला ने एक से बढ़कर एक आलिमे दीन और मुफ़्ती को इस परिवार में भेजा जो जीवन भर मज़हब व मिल्लत और क़ौम की ख़िदमत करते रहे । आज दुनिया भर के मुसलमान इस परिवार से अपने किसी भी तरह के संबंध पर गर्व करते हैं

रज़वी परिवार का इतिहास

रज़वी परिवार एक पठानी वंश है । इन के पूर्वज अफ़ग़ानिस्तान के "बरेछ" क़बीला से थे । पठान ही के एक वंश को बरेछ कहा जाता है ।

पठान का ख़िताब एक सहाबी हज़रत मलिक अब्दुर्रशीद ؓ को नबी करीम ﷺ से मिला था । हज़रत मलिक अब्दुर्रशीद ؓ अफ़ग़ानिस्तान के रहने वाले थे और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ؓ की दावत पर अपने साथियों समेत मदीना जाकर नबी करीम ﷺ के दरबार में इस्लाम क़ुबूल किया ।

मलिक अब्दुर्रशीद ؓ का असल नाम "क़ैस अब्दुर्रशीद" था । हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने फरमाया: तुम "मलिक तालूत" के वंश से हो जिनको अल्लाह तआला ने क़ुरान में "मलिक" (बादशाह) का ख़िताब दिया है इसलिए तुम को भी मलिक कहा जाए । उस वक़्त से आप का नाम "क़ैस अब्दुर्रशीद" से "मलिक अब्दुर्रशीद" हो गया ।

नबी करीम ﷺ ने एक जंग में आप को अफग़ानियों का सरदार बना कर भेजा । आप ने उस जंग में बड़ी बहादुरी दिखाई और सत्तर दुश्मनों को क़त्ल किया । आप की बहादुरी को देख कर रसूलुल्लाह ﷺ बहुत ख़ुश हुए और दुआ देकर फरमाया : तुम्हारा वंश बहुत फैलेगा और क़यामत तक दीन को मज़बूत करेगा उसकी मज़बूती उस लकड़ी के समान होगी जिस पर जहाज़ की नींव रखी जाती है । उस लकड़ी को अरबी भाषा में "बतान" कहते हैं । इसी लिए हज़रत मलिक अब्दुर्रशीद ؓ बतान के नाम से मशहूर हुए ।

बतान का शब्द आम बोलचाल में पठान से बदल गया और आप के वंश को पठान कहा जाने लगा।

हज़रत मलिक अब्दुर्रशीद ﷺ की शादी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ﷺ की लड़की "मुताहिरा" के साथ हुई जिन से एक बेटा इब्राहीम जन्म लिया। हज़रत इब्राहीम ही के बड़े बेटे शरजून उर्फ शरफुद्दीन की औलाद को बरेछ कहते हैं।

अफ़ग़ानिस्तान पर बरेछ क़बीला का सैकड़ों साल राज रहा। रज़वी परिवार के पूर्वज शुजाअत जंग मोहम्मद सईदुल्लाह उसी बरेछ क़बीला के एक सरदार थे। आप ही के वंश में चौदहवीं शताब्दी के मुजद्दिद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ﷺ हुए जिनके परिवार को रज़वी परिवार कहा जाता है।

(डा. मोहम्मद हसन की पुस्तक "मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे" के पृष्ट 60 से 63 का सारांश)

रज़वी परिवार की विशेषताएँ

रज़वी परिवार की बहुत सी विशेषताएँ हैं जिनके कारण वह हिंदुस्तान और हिंदुस्तान के बाहर प्रसिद्ध हैं। नीचे हम केवल कुछ ही बातों का संक्षिप्त रूप से उल्लेख कर रहे हैं।

फ़तवा लिखना : फ़तवा का अर्थ होता है इस्लाम का सही आदेश बताना। इस्लाम के सब से पहले मुफ़्ती नबी करीम ﷺ हैं। इस से आप इस के महत्त्व का अनुमान लगा सकते हैं ।

रज़वी परिवार में फ़तवा लिखने की बुनियाद सब से पहले आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ के दादा मुफ़्ती रज़ा अली ख़ान बरेलवी ﷺ ने 1831 ई. में डाली। वह रज़वी परिवार के सब से पहले मुफ़्ती हुए। तब से लेकर आज तक लगभग 187 साल से इस परिवार में लगातार यह सिलसिला जारी है। इस परिवार के मुफ़्ती और उनके फ़तवा लिखने की अवधि निम्नलिखित है :

रज़वी परिवार के बड़े मुफ़्ती

मुफ़्ती	कब से	कब तक	अवधि
मुफ़्ती रज़ा अली ख़ान ﷫	1831 ई.	1865 ई.	34 वर्ष
मुफ़्ती नक़ी अली ख़ान ﷫	1847 ई.	1880 ई.	33 वर्ष
मुफ़्ती अहमद रज़ा ख़ान ﷫	1869 ई.	1921 ई.	52 वर्ष
मुफ़्ती हामिद रज़ा ख़ान ﷫	1895 ई.	1943 ई.	48 वर्ष
मुफ़्ती मुस्तफा रज़ा ख़ान ﷫	1910 ई.	1981 ई.	71 वर्ष
मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान ﷫	1967 ई.	2018 ई.	51 वर्ष

इस चार्ट के अनुसार रज़वी परिवार के मुफ्तीयाने किराम के फ़तवा लिखने की कुल अवधि 289 वर्ष होती है।

नातिया शायरी लिखना : कहते हैं कि शायरी एक प्रकृतिक देन होती है। आसपास के वातावरण या किसी खास विषय वस्तु से प्रभावित हो कर ही मिज़ाज शायराना बनता है फिर मेहनत, लगन और भाषा का ज्ञान आदमी को एक अच्छा शायर बना देता है। हर दौर में इस का महत्त्व रहा है। उर्दू भाषा में नातिया शायरी की बात करें तो इस सूची में भी रज़वी परिवार का नाम सब से पहला स्थान पर आता है। ऐसा लगता है कि इस परिवार में शायरी धन-संपत्ति की तरह विरासत में मिलती है। यह सब केवल इन का अपने नबी ﷺ से सच्ची मोहब्बत और इश्क़ का परिणाम है। डा. शफ़ीक़ अजमल क़दरी लिखते हैं :

> इमाम अहमद रज़ा मोहद्दीस बरेलवी उर्दू के पहले बड़े शायर हैं जिन्होंने अपनी शायरी का मौज़ू (विषय) सिर्फ नात गोई को क़रार दिया। उनके बाद भी उनके ख़ानवादे ने कई अच्छे शायर उर्दू अदब को दिये जिन्होंने अपनी फ़ितरी सलाहियतों से उर्दू शेर व अदब के ख़ज़ाने में बेश बहा इज़ाफ़े किए।
>
> *(तजल्लीयाते ताजुश्शरिया, पृष्ठ: 463)*

रज़वी परिवार के शायर और उनका दीवान

शायर	उपनाम	दीवान
आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	रज़ा	हदाईक़े बख़्शिश
उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	हसन	ज़ौक़े नात
मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द मुस्तफा रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	नूरी	सामाने बख़्शिश
हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा رحمۃ اللہ علیہ	हामिद	नातिया दीवान
ताजुश्शरिया अल्लामा अख़्तर रज़ा رحمۃ اللہ علیہ	अख़्तर	सफीना-ए-बख़्शिश

यह चार्ट अधूरा है, परिवार के कुछ सदस्यों का नाम इस में नहीं है

पुस्तक लिखना : लेखन और कथन के बीच का अन्तर हम सब को पता है, लिखी हुई बातें देर तक रहती हैं और कही हुई जल्द ख़त्म हो जाती है। आज हम अपने इमामों और बड़े बड़े उलमा को उनकी लिखी हुई पुस्तक ही के माध्यम से जानते हैं और उनकी लिखी हुई पुस्तकों से आज तक लाभ उठा रहे हैं।

इसी कारण लिखने लिखाने के महत्त्व को सामने रखते हुए आला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ ने इस तरफ विशेष ध्यान दिया। अरबी, उर्दू और फारसी भाषा में पचास से अधिक विषय पर एक हज़ार के लगभग पुस्तकें लिख डाली, इन में सिर्फ एक पुस्तक "फतावा रज़वीया" आजकल 30 भाग, लगभग 3500 पेज में छपती है।

रज़वी परिवार में पुस्तक लिखने का रिवाज आला हज़रत के पिता अल्लामा नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ से शुरू हुआ और आज तक यह रिवाज बाक़ी है। इस परिवार के कुछ महान लेखक की सूची और उनके द्वारा लिखी पुस्तक की संख्या निम्नलिखित है।

रज़वी परिवार के महान लेखक

लेखक	पुस्तक की संख्या
अल्लामा नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	30
आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	लगभग एक हज़ार
उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	8
हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा رحمۃ اللہ علیہ	15
मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द मुस्तफा रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	39
मुफ़स्सिरे आज़म इब्राहीम रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ	12
ताजुश्शरिया अल्लामा अख़्तर रज़ा رحمۃ اللہ علیہ	61

इन्हीं विशेषताओं के कारण आज हम सब इस परिवार के आभारी हैं और इस परिवार के किसी भी सदस्य से अपने संबंध पर गर्व करते हैं।

रज़वी परिवार के महत्त्वपूर्ण कारनामे

रज़वी परिवार की ख़िदमात और उनके कारनामों को लिखने के लिए अलग से एक पुस्तक लिखनी पड़ेगी। हम इस छोटी सी पुस्तक में केवल दो चार महत्त्वपूर्ण ख़िदमात को ही लिख पाएंगे जो निम्नलिखित हैं :

आज़ादी की लड़ाई में योगदान: भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी गई 1857 ई. की पहली लड़ाई में इस परिवार ने भरपूर हिस्सा लिया और अंग्रेज़ों को नाकों चने चबवाये। इस परिवार को अंग्रेज़ों से सख़्त नफरत थी। हमेशा अंग्रेज़ों का विरोध करते रहे और उनकी सत्ता को जड़ से उखाड़ फेंकने के प्रयास में लगे रहे। देश को अंग्रेज़ों की हिंसा से मुक्ति दिलाने के लिए इस परिवार के पूर्वज मौलाना रज़ा अली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ और मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ हमेशा ज़बान व क़लम और जान माल से जिहाद करते रहे।

अंग्रेजों के ख़िलाफ़ उलमा ने जिहाद का फतवा दिया था। फतवा देने वाले उलमा की कमेटी में अल्लामा फज़ले हक़ खैराबादी के साथ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ﷫ के दादा मौलाना रज़ा अली ख़ान ﷫ और पिता मौलाना नक़ी अली ख़ान ﷫ भी शामिल थे।

मौलाना नक़ी अली ख़ान ﷫ अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद करने के लिए जगह जगह घोड़े भिजवाते थे। आप ही के भाषण के कारण अंग्रेज़ों को मुसलमानों ने हरा कर बरेली छोड़ने पर मजबूर कर दिया।

शुद्धिकरण आंदोलन की रोक थाम: शुद्धिकरण का अर्थ होता है "पाक व पवित्र" करना। हिन्दू कहते थे कि जो लोग पहले हिन्दू थे फिर मुसलमान हो गए उन को दोबारा हिन्दू बना कर हम शुद्ध कर रहे हैं। इसी कारण उसने अपने इस आंदोलन का नाम शुद्धिकरण रखा। 1920 ई. में यह आंदोलन शुरू हुआ था और भोले भाले मुसलमानों को रूपये पैसे की लालच और जान माल के नुक़सान की धमकी देकर ज़बरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था और उन्हें मुर्तद और बेदीन बना रहा था।

उस समय इसी परिवार के सदस्य हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा ख़ान ﷫ और मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान ﷫ उलमा की टीम लेकर मैदान में उतरे और इस आंदोलन की रोक थाम किए। इस प्रकार इस परिवार के कारण हिंदुस्तान के हज़ारों मुसलमान जो दीन से फिर गए थे दोबारा मुसलमान हुए और शुद्धिकरण आंदोलन असफल हुआ।

गुमराह फिरक़ों का रद्द: आए दिन बरसाती मेंढक की तरह नए नए फिरक़े जन्म लेते रहते हैं या फिर पुराने ही फिरक़े नए रंग रूप से अपना जाल बिछाते हैं। लेकिन हमारे उलमा-ए-किराम हमेशा उनकी चाल को नाकाम करने में लगे रहे। इस मैदान में भी रज़वी

परिवार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस परिवार के उलमा ने अपनी तहरीर और तक़रीर (पुस्तक और भाषण) के माध्यम से उन बातिल फिरक़ों का रद्द किया है। शिया, क़ादियानी, वहाबी, देवबन्दी आदि गुमराह फिरक़ों का अपनी तहरीर और तक़रीर से रद्द करने वाले रज़वी परिवार के कुछ उलमा के नाम निम्नलिखित हैं :

- अल्लामा नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ
- उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ
- हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ
- मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ
- मुफ़स्सिरे आज़म अल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ
- ताजुश्शरिया अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी मियां رحمۃ اللہ علیہ

इन उलमा ने उन फिरक़ों के बातिल अक़ाइद और ग़लत सिद्धांतों से लोगों को ख़बरदार कर के मुसलमानों के ईमान व अक़ीदा की रक्षा की है और ग़लत दिशा में जाने से बचाया है।

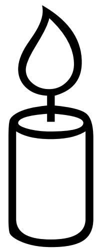
नसबंदी के ख़िलाफ़ फ़तवा: 1975 ई. में कॉंग्रेस सरकार ने नसबंदी का नियम पास किया कि दो संतान के बाद सभी महिलाओं के लिए नसबंदी अनिवार्य है। अब मुसलमान इस विषय में शरीअत का आदेश जानने के लिए देश के विभिन्न दारुल इफ्ता से संपर्क करने लगे। दूसरी ओर दारुल उलूम देवबन्द का फ़तवा भी आ गया कि नसबंदी कराना जाएज़ है यानि करवा सकते हैं।

उस समय मुसलमानों को इस पाप से बचाने के लिए रज़वी परिवार के एक सपूत ने क़लम उठाया और दारुल उलूम देवबन्द के फ़तवा के विपरीत नसबंदी हराम होने का फ़तवा दे कर लोगों को इस गुनाह से बचाया। सरकार ने फ़तवा वापिस लेने का दबाव भी डाला

लेकिन साफ कह दिया गया कि यह क़ुरान और हदीस से लिखा गया फ़तवा है किसी तरह वापिस नहीं हो सकता।

पुस्तक और फतावा: इस परिवार द्वारा लिखी गई हज़ारों की संख्या में पुस्तकें और फतावा हम मुसलमानों के लिए किसी उपहार से कम नहीं। यह भी इस परिवार का एक महत्त्वपूर्ण कारनामा है जिसके लिए हम अहले सुन्नत व जमाअत आभारी हैं।

अब्दुर रहीम समर मिस्बाही
मदरसा ऐनुल हुदा दिलानीपुर, पोर्ट ब्लेयर
अंडमान निकोबार द्वीपसमूह
10-01-1440 हि.

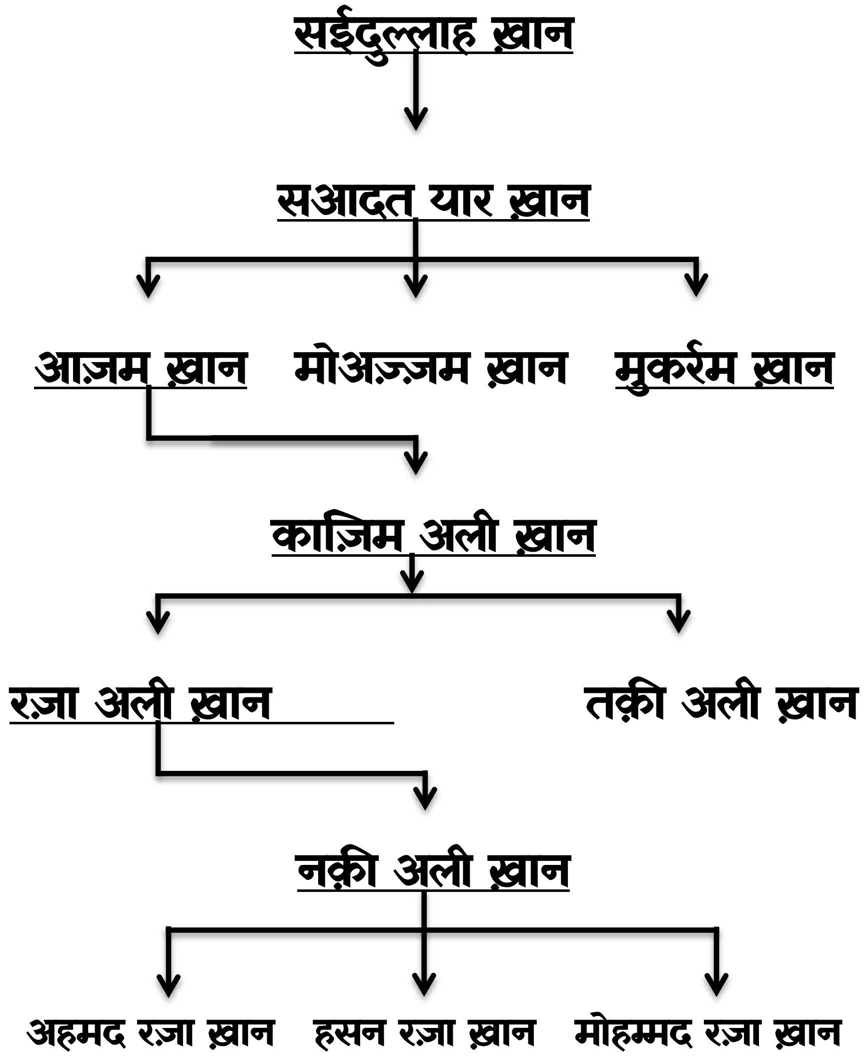


अध्याय 1......

पूर्वज

28 ………... 40

वंशावली 1 : पूर्वज ✍


सईदुल्लाह ख़ान
सआदत यार ख़ान
आज़म ख़ान
मोअज़्ज़म ख़ान
मुकर्रम ख़ान
काज़िम अली ख़ान
रज़ा अली ख़ान
तक़ी अली ख़ान
नक़ी अली ख़ान
अहमद रज़ा ख़ान
हसन रज़ा ख़ान
मोहम्मद रज़ा ख़ान

सईदुल्लाह ख़ान

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ के पूर्वज जिनका नाम इतिहास में मिलता है वह सईदुल्लाह ख़ान है, जिनका संबंध अफ़ग़ानिस्तान के "बरेछ" वंश से था। सईदुल्लाह ख़ान के पिता कंधार के राजा थे लेकिन किसी कारण 1739 ई. में आप कंधार छोड़ कर लाहौर आ गए।

आप बहादुर और एक अच्छे सिपाही थे इसलिए लाहौर के शासक ने आप को हाथों हाथ लिया और लाहौर का शीश महल जागीर में दे दिया। फिर जब किसी काम से दिल्ली गए तो राजदरबार में बुला कर आप को फौज का एक बड़ा पद "शश हज़ारी" दिया गया। कुछ समय के बाद जब रोहेलखंड में बग़ावत हुई तो आप को उस बग़ावत की रोकथाम के लिए रोहेलखंड भेजा गया, बग़ावत ख़त्म होने के बाद राजदरबार से "शुजाअत जंग" ख़िताब मिला और रोहेलखंड के सदर मुकाम बरेली में रहकर अमन व शान्ति बनाए रखने का आदेश हुआ। बरेली में कुछ अफ़गानी पठान रहते थे इसलिए जब आप बरेली गए तो वहीं के हो कर रह गए।

बरेली में आप को जागीर भी मिली थी जो 1857 ई. में जब्त कर ली गई और जिला रामपुर में मिला दी गई। बुढ़ापे के कारण आप ने शाही नौकरी छोड़ कर यादे इलाही में लग गए। इंतक़ाल के बाद जहाँ आप रहते थे वहीं पर दफन किया गया, आज वह मैदान क़ब्रिस्तान में शामिल है और आप ही के नाम से "शहज़ादे का तकिया" कहलाता है।

संतान: सईदुल्लाह ख़ान का एक बेटा था जिन का नाम सआदत यार ख़ान था।

<u>सईदुल्लाह ख़ान</u>

↓

सआदत यार ख़ान

सआदत यार ख़ान

सईदुल्लाह ख़ान के बेटे का नाम सआदत यार ख़ान था। पिता के शाही नौकरी से इस्तीफा देने के बाद, सआदत यार ख़ान को दिल्ली के दरबार में गृहमंत्री बनाया गया था, आप ने दिल्ली में अपनी दो स्मारक (यादगारें) छोड़ीं। एक "सआदत गंज का बाज़ार" और दूसरी "सआदत खाँ की नहर"। आप की सरकारी मुहर आला हज़रत के जमाने तक मौजूद थी।

संतान आप के तीन बेटे थे। (1) आज़म ख़ान (2) मोअज़्ज़म ख़ान (3) मुकर्रम ख़ान। और तीनों राजदरबार में बड़े बड़े पद पर थे जिनका वेतन उस समय लगभग एक हज़ार था।

सआदत यार ख़ान

आज़म ख़ान | मोअज़्ज़म ख़ान | मुकर्रम ख़ान

हज़रत शाह मोहम्मद आज़म ख़ान

सआदत यार ख़ान के बड़े बेटे आज़म ख़ान बरेली में रह कर सरकारी नौकरी करते थे, अचानक दिल की दुनिया बदल गई और आप सब कुछ छोड़ कर ख़ुदा की इबादत में लग गए।

करामत: आप शहज़ादे का तकिया मेमाराने बरेली में रहते थे और आप के बेटे हाफिज़ मोहम्मद काज़िम अली ख़ान हर जुमेरात को आप से मिलने आया करते थे।

एक बार जाड़े के मौसम में हाफिज़ साहब अपने पिता जी से मिलने आए तो देखा कि आप आग की धुनी के पास बैठे हैं और आप

के बदन पर कोई गर्म कपड़ा नहीं है, हाफ़िज़ साहब ने अपना मंहगा दोशाला (शाल) उतार कर पिता जी को ओढ़ा दिया, हज़रत ने लापरवाही से उसको उतार कर आग में डाल दिया। हाफ़िज़ साहब दिल ही दिल सोचने लगे काश ! इसे किसी और को दे दिया जाता, आप के दिल में ऐसा विचार आना था कि हज़रत ने भड़कते आग में हाथ डाल कर दोशाला निकाला और बाहर फेंक दिया और कहा : "काज़िम ! फ़क़ीर के यहाँ धड़ पकड़ का मामला नहीं है। ले अपना दोशाला"। देखा तो दोशाला ठीक ठाक था एक धागा भी नहीं जला था।

संतान : आप की दो शादी हुई थी जिनमें पहली से एक बेटा हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ान जन्म लिया और दूसरी से सिर्फ़ चार बेटियाँ पैदा हुई।

<u>मोहम्मद आज़म ख़ान</u>

↓

काज़िम अली ख़ान

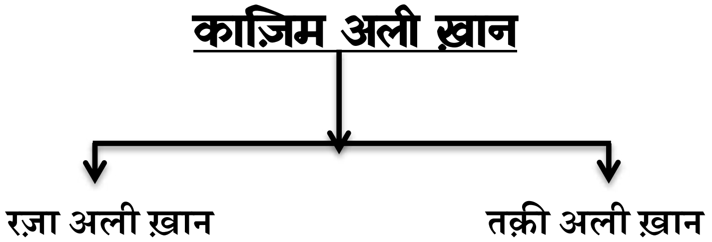
हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

हज़रत हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ बदायूं के तहसीलदार थे, दो सौ घुड़सवारों की बटालियन आप के पास रहती थीं, आठ गाँव की जागीर भी आप को मिली थी। आप एक अच्छे हाफ़िज़े क़ुरान थे और मौलाना नुरुल हक़ फिरंगी महल्ली से रज़्ज़ाक़ी सिलसिले में इजाज़त और ख़िलाफ़त हासिल थी।

आप के ज़माने में मुग़ल साम्राज्य का पतन शुरू हो चुका था, हर तरफ़ बग़ावतें हो रही थीं इसलिए आप दिल्ली से लखनऊ आकर

अवध साम्राज्य से मिल गए । अवध की जानिब से आप को एक जागीर भी मिली थी जो लम्बे समय तक आप के परिवार में रही और जब 1954 ई. में कॉंग्रेस ने ग्रामीण संपत्ति ज़ब्त की तो यह जागीर भी ज़ब्ती में आ गई ।

संतान: हाफ़िज़ साहब رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के दो बेटे थे (1) मौलाना रज़ा अली ख़ान (2) हकीम तक़ी अली ख़ान । हकीम तक़ी अली ख़ान एक अच्छे वैध भी थे इस लिए जयपुर में एक चिकित्सालय खोल कर वहीं रहने लगे ।



मौलाना रज़ा अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

आप का जन्म 1224 हि. \ 1809 ई. को बरेली में हुआ । मौलाना खलीलुर रहमान टौंकी से शिक्षा लेना शुरू किया और 22 वर्ष की आयु में आप की शिक्षा पूरी हो गई । आप बहुत से इल्म व फन के विशेषज्ञ और ज्ञानवान थे विशेष रूप से “इल्मे फ़िकह” से कुछ ज़्यादा ही लगाव था । इसी कारण शिक्षा पूरी होने के बाद आप ने एक “दारुल इफ्ता” की बुनियाद रखी और अपना पूरा जीवन “फत्वा” लिखने में बिता दिया । तब से लेकर आज तक लगभग दो सौ साल से आप का परिवार फ़िकह की सेवा और “इफ्ता” का कार्य कर रहा है ।

आप मुसलमानों के धार्मिक नेतृत्व के साथ राजनीतिक नेतृत्व भी करते थे। देश के लिए लड़ी गई 1857 ई. की पहली लड़ाई में आप ने भरपूर हिस्सा लिया और अंग्रेज़ों को नाकों चने चबवाये। एक अंग्रेज़ अफसर ने तो आप की हत्या पर पाँच सौ रुपये पुरस्कार भी रख दिया था लेकिन वह असफल रहा। एक अंग्रेज़ इतिहासकार डा. मिलिसन आप के बारे में लिखता है : "मुल्ला शाह अली वलद काज़िम अली ना होते तो अंग्रेज़ बरेली पर आसानी से क़ब्ज़ा कर लेते मगर उनके कारण काफी दिक़्क़तों का सामना करना पड़ा"।

आप हज़रत शाह फजलुर्रहमान गंज मुरादाबादी के शिष्य हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ ﷺ के मुरीद थे और उन्हीं से आप को "ख़िलाफ़त" भी मिली थी।

आप ही के कारण इस परिवार के हाथों में तलवार की जगह क़लम आया और परिवार के लोग विशेष रूप से शिक्षा पर ध्यान देने लगे। इसी कारण आप को "इमामुल उलमा" भी कहा जाता है।

वफ़ात: 1286 हि. \ 1871 ई. में आप इस दुनिया से चल बसे और बरेली की सिटी क़ब्रिस्तान में दफन हुए।

आप की करामात: हुज्जतुल इस्लाम हज़रत मौलाना शाह हामिद रज़ा ख़ान ﷺ हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ान ﷺ की करामत बताते थे कि :

वेश्या का ईमान लाना : एक दिन आप सीताराम की गली से जा रहे थे उस समय हिन्दूओं की होली का त्योहार चल रहा था। एक बाज़ारी वेश्या ने अपनी छत से आप के ऊपर रंग डाल दिया। एक मुसलमान जो यह सब देख रहा था छत पर जाकर उसे मारना चाहा लेकिन हज़रत ने रोक दिया और कहा कि "उसे क्यूँ मारते हो ? उसने मुझ पर रंग डाला है ख़ुदा उसे रंग देगा"। बस इतना कहना था कि वह

वेश्या भागती हुई आई और आपके पैरों पर गिर कर माफी मांगने लगी और इस्लाम धर्म में दाखिल हो गई।

बुराई से रोकना : मोहल्ला सौदागरान का एक नौजवान वारिस अली ख़ान एक बार आप के पास आ कर कुछ पैसे उधार मांगा। आप ने पैसा तो दे दिया साथ ही यह भी कहा कि फालतू खर्च मत करना।

मगर वह वहाँ से उठ कर सीधा एक वेश्या के पास जाने लगा, जब सीढ़ी चढ़ने लगा तो वहाँ हज़रत का छाता और छड़ी देखा, घबरा कर उल्टे पैर लौट आया और फिर दूसरी के पास गया लेकिन वहाँ भी हज़रत का छाता और आप की छड़ी रखी हुई थी, आख़िरकार वह हज़रत के पास आकर माफी मांगा और सच्चे दिल से तौबा कर लिया।

अंधा कर देना :1857 ई. के बाद बरेली पर जब अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हुआ और वह लोगों को तरह तरह से सताने लगे तो लोग उनके ज़ुल्म से डर कर अपने अपने घर छोड़ कर इधर उधर जाने लगे। लेकिन हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ान ﷫ कहीं नहीं गए बल्कि मुहल्ला "ज़ख़ीरा" में अपने ही घर में रहते थे और पांचों वक़्त नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद जाया करते थे।

एक दिन आप जब मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे तो अंग्रेज़ सिपाही मस्जिद में घुस गए और इधर-उधर ढूंढने लगे इस ख़याल से कि कोई मिले तो उसे पकड़ कर ले जाऊँ। आप उस वक़्त मस्जिद ही में थे लेकिन अल्लाह तआला ने उन लोगों को अंधा कर दिया और वह लोग आप को न देख सके। *(हयाते आला हज़रत पृष्ठ: 85-87)*

संतान : इमामूल उलमा हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ान ﷫ की दो संतान थी जिनमें एक बेटा मौलाना नक़ी अली ख़ान थे और एक बेटी थी।

<u>रज़ा अली ख़ान</u>

↓

नक़ी अली ख़ान

मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

1246 हि. \ 1829 ई. में मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का जन्म हुआ। आप ने सारी शिक्षा अपने पिता इमामूल उलमा हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ से हासिल किया। आप बचपन से ही नेक और परहेज़गार थे इसका कारण यह था कि आप को सारी शिक्षा और संस्कार अपने पिता से मिली थी जो स्वयं बहुत बड़े आलिम होने के साथ नेक, परहेज़गार और अल्लाह के वली थे।

बैअत व ख़िलाफ़त : आप अपने बेटे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान के साथ 1294 हि. में ख़ानक़ाहे बरकातीया मारहरा शरीफ जाकर सैयद शाह आले रसूल बरकाती क़ादरी मारहरवी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ से मुरीद हुए। और वहीं आप दोनों को "इजाज़त व ख़िलाफ़त" भी मिली।

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 74)

तसनीफ व तालीफ (लेखन व संकलन) : आप एक अच्छे आलिम व मुफ़्ती होने के साथ एक उत्कृष्ट साहित्यकार व शोधकर्ता भी थे। आपकी जीवनी लिखने वाले डा. मो. हसन रज़ा लिखते हैं :

> आज की दुनिया मौलाना नक़ी अली ख़ान को सिर्फ एक आलिम की हैसियत से जानती है मगर हक़ीक़त यह है कि वह एक जैइद (महान) आलिम होने के साथ साथ साहिबे तसानीफे कसीरा (बहुत सी पुस्तकों के लेखक) और अपने अहद (समय) के ज़बरदस्त अदीब व मोहक़्क़िक़ (साहित्यकार व शोधकर्ता) भी थे।

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 3)

आप 43 से अधिक विषय और कला के विशेषज्ञ और विभिन्न

विषय में लगभग तीन दर्जन से अधिक पुस्तकों के लेखक थे। जिनमें से कुछ आप के जीवन काल ही में छप चुकी थीं और बाक़ी बाद में छपी।

आप की तसनीफ व तालीफ के बारे में मौलाना हसन रज़ा ख़ान लिखते हैं :

> मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ को कुतुब बीनी (पुस्तक अध्ययन), फ़तवा नवेसी, दरस व तदरीस (पठन, पाठन), इबादत व रियाज़त, खिदमाते दीनी व मिल्ली के अलावा तसनीफ व तालीफ से भी बहुत ज़्यादा शग़ाफ (लगाव) था। .... आप ने उर्दू ज़बान (भाषा) को अपनी गिरां क़दर (बहुमूल्य) तसानीफ से माला माल किया। आप ने मुख़्तलिफ़ उलूम व फुनून (विभिन्न ज्ञान व कला) और मौज़ूआत (विषय) पर किताबें लिखीं।

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 87)

औसाफ व कमालात \ विशिष्ट गुण : आप बहुत से औसाफ व कमालात के मालिक नेक और परहेज़गार थे, हर समय वज़ू से रहते थे और नमाज़ बाजमाअत के पाबंद थे। अक्सर रोज़े से रहते और फर्ज़ रोज़ों के अलावा नफली रोज़ा भी रखा करते थे । आप की ज़िंदगी का एक एक पल नबी करीम ﷺ की सुन्नत के अनुसार बीता। ग़रीब निर्धन परिवार के बच्चों और मदरसों के बच्चों के साथ हमेशा प्यार मोहब्बत से मिलते । आलिमे दीन की बहुत इज़्ज़त और सम्मान करते और उनके घर आने पर बहुत ख़ुश हुआ करते थे।

इश्क़े रसूल : रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत असल ईमान का आधार है और यही इश्क़े इलाही का मूल स्रोत भी है। मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ सच्चे और पक्के आशिक़े रसूल थे। आप की जीवनी में लिखा है कि :

> मौलाना नक़ी अली ख़ान बरेलवी رحمۃ اللہ علیہ को ताजदारे काइनात

सलल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच्चा इश्क़ था। मौलाना के हर क़ौल व फेल (बातचीत, काम काज) से इश्क़े रसूल की झलक नुमायां है। आप को हुज़ूर नबी करीम सलल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़बरदस्त गिरविदगी और वारफ्तगी (लगाव, भाव) थी।

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 93)

एक बार आप बीमार थे जिसके कारण बहुत कमज़ोर हो गए, इसी बीच सपने में नबी करीम सलल्लाहु अलैहि व सल्लम का दर्शन हुआ और आप कल होकर हज पर जाने का इरादा बना लिया। बीमारी के कारण लोग रोकते रहे लेकिन आप ने नहीं माना और कहा कि "मदीना जाने के इरादे से क़दम दरवाज़े से बाहर रख लूँ फिर चाहे मृत्यु क्यूँ ना हो जाये। आख़िरकार 1295 हि. में खाना काबा का हज और रौज़ा-ए-रसूल के दर्शन से अपने दिल को संतुष्ट किया।

(हयाते आला हज़रत,भाग: 1, पृष्ठ: 93)

आज़ादी की लड़ाई में आप की भूमिका: मौलाना नक़ी अली ख़ान ﷫ को अंग्रेज़ों से सख़्त नफरत थी आप ने हमेशा अंग्रेज़ों का विरोध किया और उनके सत्ता को जड़ से उखाड़ फेंकने के प्रयास में लगे रहे। देश को अंग्रेज़ों के शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए आप ने हमेशा ज़बान और क़लम से जिहाद किया। मौलाना हसन रज़ा साहब शमसुत तवारीख़ के हवाले से लिखते हैं :

मौलाना रज़ा अली ख़ान ﷫ अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लिसानी (ज़बानी) व क़लमी जिहाद में मशहूर हो चुके थे। अंग्रेज़ मौलाना की इल्मी वजाहत व दबदबा से बहुत घबराता था। आपके साहबज़ादे (बेटा) मौलाना नक़ी अली ख़ान ﷫ भी अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद में मसरूफ़ थे। मौलाना नक़ी अली ख़ान का

हिन्द के उलमा में बहुत ऊंचा मक़ाम था। अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आप की अज़ीम क़ुर्बानियाँ हैं।

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 94)

देश से अंग्रेज़ों को निकाल बाहर करने के लिए भारत के उलमा की एक कमेटी गठन हुई थी उसी कमेटी नें अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद का फ़तवा दिया था। उस जिहाद कमेटी में अल्लामा फज़्ले हक़ खैराबादी के साथ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी के दादा मौलाना रज़ा अली ख़ान और पिता मौलाना नक़ी अली ख़ान भी शामिल थे।

मौलाना नक़ी अली ख़ान अग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद करने के लिए जगह जगह घोड़े भिजवाते थे। आप ही के भाषण के कारण अंग्रेज़ों को मुसलमानों ने हरा कर बरेली छोड़ने पर मजबूर कर दिया था।

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 95)

वफ़ात :1297 हि. 1880 ई. इस्लामी महीने के ज़िकादा की आख़री तारीख़ को गुरुवार के दिन ज़ोहर की नमाज़ के वक़्त एकावन वर्ष पाँच महीने की उम्र में आप अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिले और शुक्रवार की रात अपने पिता मौलाना रज़ा अली ख़ान के बगल में सिटी क़ब्रिस्तान बरेली में दफन हुए।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضي الله تعالى عنه अपने पिता की मृत्यु समय की बातें इन शब्दों में लिखते हैं :

रोज़े विसाल (मृत्यु के दिन) नमाज़े सुबह (फ़जर) पढ़ ली थी और हुनूज़ (अभी भी) वक़्ते ज़ोहर बाक़ी था कि इन्तेक़ाल फरमाया। नज़अ (आख़री समय) में सब हाज़िरीन (दर्शक) ने देखा कि आँखें बंद किए मोतवातिर (लगातार) सलाम

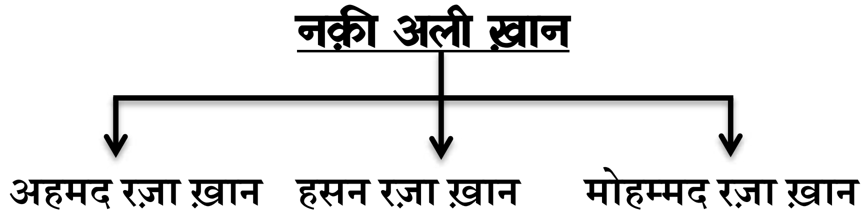
फरमाते थे। जब चंद अनफास (लोग) बाक़ी रहे, हाथों को अज़ा-ए-वज़ू (वज़ू में धोने के अंग) पर यूँ फेरा गोया वज़ू फरमा रहे हैं। यहाँ तक कि इस्तिंशाक़ (नाक साफ) फरमाया। सुबहानल्लाह ! वह अपने तौर पर हालते बेहोशी में नमाज़े ज़ोहर अदा फरमा गए।

(हयाते आला हज़रत,भाग: 1, पृष्ठ: 94)

आगे लिखते हैं की जिस समय रूह निकली सूरज की किरन शीशे में चमकने के समान एक रोशनी चेहरे पर चमकी और फिर गायब हो गई और इसी के साथ आप का इन्तेक़ाल हो गया। आख़िरी शब्द जो आप के मुंह से निकला वह "अल्लाह" था और दो दिन पहले जो आख़री बात लिखी थी वह बिस्मिल्लाह थी।

(सारांश:हयाते आला हज़रत,भाग: 1, पृष्ठ: 94)

संतान : आप के छह संतान जिनमें तीन लड़के और तीन लड़कियां थीं। सबसे बड़े बेटे का "अहमद रज़ा ख़ान", बीच वाले का "हसन रज़ा ख़ान" और सब से छोटे बेटे का "मोहम्मद रज़ा ख़ान" नाम था।





अधाय्य 2......

आला हज़रत

व

बिरादरान

41..................54

आला हज़रत
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

जन्म : मौलाना नक़ी अली ख़ान के सबसे बड़े बेटे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान का जन्म 10 शौव्वाल 1272 हि. \ 14 जून 1856 ई. इतवार के दिन बरेली शहर के मोहल्ला "ज़ख़ीरा" में इमली वाली मस्जिद के पास आप के पुश्तैनी मकान में हुआ।

(अलमलफ़ूज़ भाग: 1 पृष्ठ: 15)

शिक्षा : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान प्राकृतिक बुद्धिमान और खुदा दाद सलाहियत के मालिक थे। आप के तेज़ दिमाग़, बुद्धि और याददाश्त का अनुमान इस से लगाया जा सकता है कि आप ने सिर्फ चार वर्ष की उम्र में क़ुरान पाक नाज़रा ख़त्म कर लिया था, छह वर्ष की उम्र में अरबी भाषा मुकम्मल सीख चुके थे, इसी उम्र में एक बहुत बड़ी सभा के सामने तक़रीर की, अपने उस्ताद से किसी भी किताब का चौथाई हिस्सा सबक पढ़ते और पूरी किताब सुना देते और सिर्फ चौदह साल की उम्र में अपने पिता मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ से सभी सभी प्रचलित विषयों की शिक्षा हासिल करके 14 शाबान 1286 हि.\1870 ई. में फारिग़ हो गए।

जिस दिन आप फारिग हुए उसी दिन आपने रज़ाअत (स्तनपान) के विषय में एक फ़तवा लिख कर पिता जी को दिखाया था जो बिलकुल सही था इसी लिए आप के पिता ने उसी दिन फ़तवा लिखने का काम आप के ज़िम्मे सौंप दिया जिसको आप जीवनभर मेहनत और लगन के साथ करते रहे।

आप लगभग सौ से अधिक ज्ञान और कला के जानकार और विशेषज्ञ थे जिनमें से बहुतों को आप बग़ैर किसी की सहायता के खुदा दाद सलाहियत के कारण जानते थे। मौलाना हसन रज़ा साहब

"माहनामा कारी' अप्रैल 1989 के "इमाम अहमद रज़ा नंबर" के हवाले से आप के ज्ञान और कला के संबंध लिखते हैं :

> इमाम अहमद रज़ा ख़ान ने उलूमे दरसिया (मदरसा की प्रचलित शिक्षा) दीगर (दूसरे) उलूम व फुनून (ज्ञान व कला) की भी तहसील की। हैरत (आश्चर्य) यह है कि बाज़ (कुछ) उलूम ऐसे हैं जिनमें किसी उस्ताद की रहनुमाई (सहायता) के बग़ैर आपने खुदा दाद ज़ेहानत से कमाल हासिल किया, ऐसे तमाम उलूम व फुनून की तादाद (संख्या) तकरीबन (लगभग) चौवन है। कई फन (कला) उसमें ऐसे हैं कि दौरे जदीद के (आज के) बड़े बड़े मोहक़्क़िक़ और आलिम उन्हें जानना तो दरकिनार (दूर) शायद उनके नामों से भी वाक़िफ़ ना होंगे।

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 43)

बैअत व ख़िलाफ़त : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान 1294 हि. में अपने पिता मौलाना नक़ी अली ख़ान और मौलाना अब्दुल क़ादिर बदायूनी के साथ ख़ानक़ाहे बरकातीया मारहरा शरीफ यू०पी जाकर सैयद शाह आले रसूल क़ादरी बरकाती मारहरवी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ से मुरीद हुए, और वहीं आप को "इजाज़त व ख़िलाफ़त" भी मिली।

हज व ज़ियारत : आप ने दो बार हज किया एक बार जब आप 23 साल के थे तो अपने पिता मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के साथ 1878 ई. में हज को गए और दूसरा हज एकावन वर्ष पाँच माह की उम्र में 1905 ई. में किए।

मक्का और मदीना के उलमा-ए-किराम और वक़्त के मुफ़्तीयाने इज़ाम से आप की अच्छी जान पहचान हो गई थी और वह आप के इल्म का लोहा मान चुके थे।

हज के दौरान वहाँ के बड़े बड़े हनफी उलमा हनफी नमाज़ के

वक़्त आप को इमाम बनाते थे।

रसुलुल्लाह ﷺ की ज़ियारत : दूसरी बार जब आप मदीना शरीफ गए तो रसुलुल्लाह ﷺ के रौज़ा-ए-अनवर के पास बैठ कर दुरूद शरीफ पढ़ते रहे आप को यक़ीन था कि नबी करीम ﷺ की ज़ियारत ज़रूर होगी लेकिन पहली रात ऐसा नहीं हुआ जिसके कारण आप कुछ दुखी हो गए और एक नात लिखी जिस की पहली पंक्ति है :

वह सुए लालाज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

इस के आखिर में आप ने कहा :

कोई क्यूँ पूछे तेरी बात रज़ा
तुझ से कुत्ते हज़ार फिरते हैं

यह नात रौज़ा-ए-रसूल पर पढ़ कर बा अदब हो कर बैठ गए कि अचानक क़िस्मत जाग उठी और बेदारी में अपने सर की आँखों से नबी करीम ﷺ की ज़ियारत से सरफराज़ हुए।

(हयाते आला हज़रत, भाग: 1, पृष्ठ: 136,137)

आला हज़रत का इश्क़े रसूल और नातिया शायरी

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान एक सच्चे और पक्के आशिक़े रसूल थे। आप के जीवन का एक एक पल इश्क़े रसूल में समर्पित था। आप कहते थे :

बहम्दिही तआला अगर क़ल्ब (हृदय) के दो टुकड़े किए जाएँ तो ख़ुदा की क़सम एक पर लाइलाहा इलल्लाह और दूसरे पर मोहम्मदूर रसुलुल्लाह होगा।

(इमाम अहमद रज़ा अरबाबे इल्म व दानिश की नज़र में, पृष्ठ: 65)

नात लिखने के लिए नबी करीम ﷺ से सच्चा इश्क़ होने के साथ शरीअत की सही जानकारी भी बहुत ज़रूरी है अन्यथा कब वह ईमान से हाथ धो बैठेगा पता भी नहीं चलेगा। आला हज़रत इमाम

अहमद रज़ा ख़ान नातिया शायरी में भी अपने वक़्त के इमाम हैं। क़ुरान व हदीस की रोशनी में लिखी गई आप की नात की एक एक पंक्ति के एक एक शब्द से इश्क़े रसूल साफ झलकता है। आप की लिखी नातों का मजमुआ "हदाईक़े बख़्शिश" के नाम से है जिसके एक एक पृष्ठ से इश्क़े रसूल का समुंदर छलकता है।

कविता के मैदान में आप का कोई उस्ताद नहीं था बल्कि यह आप को क़ुदरत की देन थी अलबत्ता नबी करीम ﷺ के दरबारी शायर हज़रत हस्सान बिन साबित ؓ का जीवन और इश्क़े रसूल में कही गई उनकी नात आप के सामने ज़रूर थी।

रहबर की रहे नात में गर हाजत हो
नक़्शे क़दम हज़रते हस्सान बस है

(कलामे रज़ा)

नात लिखने में आप का जोड़ा कोई नहीं था और नहीं अब तक कोई हुआ है। आप की शायरी में जो खूबसूरती, अनोखापन और इश्क़े रसूल की जो चाशनी मिलती है वह अपने आप में बेमिसाल है। आप की एक ऐसी भी नात है जिसमें आपने एक ही समय में अरबी, फारसी, उर्दू और पूर्बी चार भाषा का प्रयोग किया है।

लम याते नज़ीरो क फी नज़रिम मिसले तू ना शुद पैदा जाना
जग राज को ताज तोरे सर सु है तुझ को शहे दूसरा जाना

आज कोई भी ऐसी महफिल और जलसे जुलूस नहीं होते जिसमें आप की नात ना पढ़ी जाती हो। प्रोफेसर इलाही बख़्श आप की नातिया शायरी के बारे में लिखते हैं:

मौलाना (अहमदा रज़ा ख़ान) एक तरफ आशिक़े सादिक़ थे तो वहीं दूसरी तरफ उलूमे दीनी व दुन्यावी की गहराई व गिराई, फिकरी व ज़ेहनी सलाहियत, फ़क़ीहाना बसीरत आलिमाना तबह्हूर ने उनके कलाम को लाफ़ानी बना दिया है।

(इरफाने रज़ा, पृष्ठ: 73)

आला हज़रत एक महान लेखक : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ सौ से अधिक ज्ञान और कला के विशेषज्ञ थे और इनमें से लगभग चौव्वन उलूम पर एक हज़ार से अधिक आप ने पुस्तकें लिखी । "तज़किरा-ए-मशाईखे क़ादरिया रज़विया" के लेखक मौलाना अब्दुल मुज्तबा लिखते हैं :

> इमाम अहमद रज़ा ने तहरीर (लिखने) को सब से ज़्यादा अहमियत दी और पूरी ज़िन्दगी तसनीफ व तालीफ में गुज़ार दी। आप ने चौवन से ज़्यादा उलूम पर तक़रीबन एक हज़ार कुतुब तसनीफ कीं।

(तज़किरा-ए-मशाईखे क़ादरिया रज़विया, पृष्ठ : 107)

आप एक ज़बरदस्त अनुभवी और तजुरबेकार अदीब थे।आप को साहित्य और उर्दू अरबी फारसी भाषा पर अच्छी पकड़ थी। आप का तर्जुमा-ए-क़ुरान "कंज़ूल ईमान" , "फतावा रज़विया", "हदाईक़े बख़्शिश" आदि आप के महान साहित्याकार और लेखक होने का पता देते हैं । धार्मिक विषय के अलावा आप ने विज्ञान, गणित, समाजशास्त्र आदि विषय पर भी कई पुस्तकें लिखी है।

जब आप दूसरी बार हज के लिए गए थे तो मक्का शहर के क़ाज़ी हनफी मुफ़्ती हज़रत मौलाना सालेह कमाल ﷺ ने इल्मे ग़ैब के विषय में आप से पाँच प्रश्न किए थे जिनके जवाब में आपने केवल आठ घंटे में बिना किसी पुस्तक के सहायता से पूरी एक किताब "अद्दौलतुल मक्किया " "الدولۃ المکیہ بالمادۃ الغیبیہ" लिख डाली जिसको शरीफ अली पाशा के दरबार में पढ़ कर वहाँ के उलमा के सामने सुनाया गया और जिस को सुनकर सभों ने सराहा । इसी तरह उस समय हरम के इमाम मौलाना अब्दुल्लाह और मौलाना हामिद मोहम्मद अहमद ने भी आप से कुछ प्रश्न किए जिसके जवाब में

"कफ़लूल फ़क़ीह" "كفل الفقيہ الفاهم فی احكام قرطاس الدراهم" नामी किताब लिखी, वह लोग आप के उत्तर और तर्क देख कर बहुत प्रसन्न हुए थे।

(हयाते आला हज़रत)

करामात : इस विषय पर अलग से एक किताब "करामाते आला हज़रत" छप चुकी है। आप की जीवनी लिखने वाले मलेकुल उलमा अल्लामा ज़फरुद्दीन बिहारी ﷫ ने "हयाते आला हज़रत" में आप की सैकड़ों करामतों का उल्लेख किया है। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

जनाज़ा पढ़ाने की बरकत: बरेली शहर के एक नवाब का इन्तेक़ाल हो गया। उसकी माँ की इच्छा अनुसार आला हज़रत ﷫ ने जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई और तीसरी तक्बीर के बाद आप ने वह सारी दुआयें पढ़ी जो हदीसों में आई हैं। रात को उनकी पत्नी ने सपने में देखा कि नवाब साहब बहुत ख़ुश हैं। पत्नी ने कारण पूछा कि आप इतने ख़ुश क्यूँ हैं ? नवाब साहब ने कहा कि आला हज़रत ने मेरा जनाज़ा पढ़ाया और इतनी दुआ की कि अल्लाह तआला ने मुझे माफ कर दिया और मेरे गुनाहों को बख़्श दिया है इसी लिए मैं ख़ुश हूँ। यह सब उनके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाने की बरकत है।

मौसम बदल गया : एक बार आप अपने एक मुरीद के पास एक देहात में गए हुए थे। दो दिन बाद दोपहर के समय वापसी तय पाई। सब लोग ज़ोहर की नमाज़ के बाद तांगे में बैठ गए। तेज़ धूप के कारण गर्मी बहुत ज़्यादा थी। लोग परेशान थे कि आला हज़रत ﷫ का मिज़ाज गर्म है, दोपहर के समय इतनी गर्मी कैसे सहन करेंगे। लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत ! कुछ ही देर बाद चारों तरफ बादल छा गया और रेल्वे स्टेशन तक साथ साथ चलता रहा।

ट्रेन रुकी रही : आला हज़रत ﷫ एक बार पीलीभीत से

बरेली रेल से जा रहे थे। रास्ते में नवाब गंज स्टेशन पर कुछ देर के लिए रेल रुकी। आप अपने साथियों समेत मगरीब की नमाज़ के लिए प्लेट फार्म पर उतर गए। आप के साथी परेशान थे कि अगर रेल चली गई तो क्या होगा ? मगर आप ने सुकून से अज़ान दिलवा कर नमाज़ शुरू कर दी। उधर ड्राईवर इंजन चलाता है लेकिन रेल नहीं चलती। इंजन उछलता और फिर पटरी पर गिर जाता। टीटी और स्टेशन मास्टर सब लोग जमा हो गए। ड्राईवर ने बताया कि इंजन में कोई खराबी नहीं है। अचानक एक पंडित चीख उठा कि वह देखो कोई दुरवेश (फ़क़ीर) नमाज़ पढ़ रहा है, शायद रेल इसी कारण नहीं चल रही है ? फिर क्या था आप के पास लोगों की अच्छी ख़ासी भीड़ इकट्ठा हो गई। आप नमाज़ पढ़ के अपने मुरीदीन के साथ जैसे ही ट्रेन में बैठे ट्रेन चलने लगी।

(तज़किरा इमाम अहमद रज़ा, पृष्ठ: 15)

दिल की बात जान ली : बरेली शरीफ में एक साहब थे जो बुज़ुर्गाने दीन को कुछ महत्त्व नहीं देते थे और पीरी मुरीदी को पेट का ढकोसला कहते थे। उनके परिवार वाले आला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ के मुरीद थे। वह लोग एक दिन किसी तरह बहला फुसला कर उनको भी आला हज़रत के पास मिलाने ले आए। रास्ते में एक हलवाई की दुकान पर गर्म गर्म अमीर्ती (जलेबी) बन रही थी। इस को देख कर इन साहब के मुंह में पानी आ गया और कहने लगा पहले इसे खिलाओ तो जाऊंगा घर वालों ने कहा वापसी में खा लेना पहले चलो। बहरहाल सब लोग आला हज़रत के पास पहुँच गए। इतने में एक आदमी गर्म गर्म अमीर्तीयों की टोकरी लेकर फातिहा के लिए आया। फातिहा के बाद अमीर्ती वितरण हुई। आला हज़रत की बारगाह का यह दस्तूर था कि सादाते किराम (सैयद) और दाढ़ी वालों को दो गुना हिस्सा मिलता था, चूंकि इन साहब के पास दाढ़ी नहीं थी इसलिए इन

को एक ही मिली। आला हज़रत ने कहा कि इनको एक और दो। वितरण करने वाला ने कहा हुज़ूर ! इनके दाढ़ी नहीं है। आप ने मुस्कुरा कर फरमाया : इनका दिल चाह रहा है, एक और दीजिये !

वह आदमी यह करामत देख कर आला हज़रत का मुरीद हो गया और उस दिन से बुज़ुर्गों का सम्मान भी करने लगा।

(तजल्लीयाते इमाम अहमद रज़ा, पृष्ठ:101)

बारिश बरसने लगी : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ के पास एक ज्योतिषी आया। आप ने उनसे फरमाया कहिए आप के हिसाब से बारिश कब आनी चाहिए। उसने कुंडली देख कर कहा इस महीने नहीं बल्कि अगले महीने बारिश होगी। आला हज़रत ने फरमाया, अल्लाह तआला हर बात पर क़ादिर और सर्वशक्तिमान है वह चाहे तो आज ही बारिश बरसा दे। आप सिर्फ सितारा को देख रहे हैं और मैं सितारा के साथ सितारा बनाने वाले की क़ुदरत को भी देख रहा हूँ।

दीवार पर घड़ी लगी हुई थी आप ने ज्योतिषी से पूछा कि समय क्या हो रहा है ? उसने कहा: सवा ग्यारह। आप ने फिर पूछा कि बारह बजने में कितना बाक़ी है? उसने कहा: पौन घंटा। फरमाया पौन घंटे से पहले बारह बज सकते हैं या नहीं ? उस ने कहा: नहीं। यह सुन कर आला हज़रत उठे और घड़ी की सुई घूमा दी तुरंत टन टन बारह बजने लगे। ज्योतिषी से आप ने फरमाया : आप तो कहते थे कि पौन घंटे से पहले बारह बज ही नहीं सकता तो अब कैसे बज गए ? ज्योतिषी ने जवाब दिया कि आप ने सुई घूमा दी नहीं तो पौन घंटे के बाद ही बारह बजते। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ने फरमाया : अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है जिस सितारे को जिस समय चाहे जहां चाहे पहुंचा दे। आप कह रहे हैं कि इस महीने बारिश नहीं होगी। मेरा रब चाहे तो आज और अभी बारिश होने लगे। बस इतना कहना था कि चारों तरफ घंघोर घटा छा गई और झमाझम

बारिश बरसने लगी।

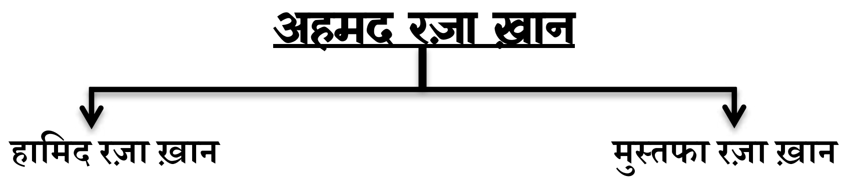
(अनवारे रज़ा, पृष्ठ : 375)

वफ़ात : 25 सफर 1340 हि. \ 28 अक्तूबर 1921 ई. जुमा के दिन अज़ान के समय "हैयालल्फलाह" के शब्द पर आप की रूह निकली और आप अपने मालिक से जा मिले।

हदीस के अनुसार हर शताब्दी में अल्लाह तआला एक ऐसे व्यक्ति को भेजता है जो दीने इस्लाम की पुनरुत्थान के लिए कुछ विशेष एवं महतपूर्ण काम करे, उसे ही "मुजद्दिद" कहा जाता है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान निश्चित रूप से चौदहवीं शताब्दी के "मुजद्दिद" हैं।

दर्जनों विश्व विद्यालय में आप के जीवन और कारनामों पर शोध कर के शोधार्थियों ने पीएचडी की डिग्री प्राप्त की है और लगभग छह से अधिक संस्था आप पर शोध और अनुसंधान का काम कर रही है।

संतान: आप की सात औलादें थीं जिन में दो लड़के और पाँच लड़कियां थीं। सब से बड़े लड़के का नाम हामिद रज़ा ख़ान और छोटे बेटे का नाम मुस्तफा रज़ा ख़ान था।



رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

उस्ताज़े ज़मन

अल्लामा हसन रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

जन्म: अल्लामा नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के दूसरे बेटे मौलाना हसन रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का जन्म 19 अक्तूबर 1859 ई. \ 1276 हि. को सौदागरान मोहल्ला बरेली में हुआ। जब आप के जन्म की खबर इमामूल उलमा हज़रत अल्लामा रज़ा अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ को पहुंची तो आप बहुत ख़ुश हुए और बोले यह मेरा बेटा मस्त होगा। उनकी बात सच साबित हुई और :

> इश्क़े रिसालत में डूबी हुई अपनी नातिया शायरी से हज़रत हसन ख़ुद भी मस्त हुए और दूसरों को भी मस्त व बेख़ुद करते रहे। *(नात के चंद शोरा-ए-मोतक़द्देमिन: डा. शमीम गौहर)*

(मौलाना नक़ी अली ख़ान, हयात और कारनामे, पृष्ठ: 55)

शिक्षा : आप ने पूरी शिक्षा अपने पिता मौलाना नक़ी अली ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ और बड़े भाई इमाम अहमद रज़ा ख़ान से ली। शेर व शायरी में दाग़ देहलवी के भी शिष्य थे।

आप शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के मुरीद थे। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के "तहफ़्फ़ुज़े नामूसे रिसालत" आंदोलन से प्रभावित हो कर नात कहने की तरफ आकर्षित हुए। ख़ुद इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ आप की शायरी के बारे में कहते हैं :

> मौलाना काफी और हसन मियाँ का कलाम अव्वल से आखिर तक शरीअत के दायरे में है, उनको मैंने नात गोई के उसूल (तरीक़ा) बता दिये थे उनकी तबीयत में ऐसा रंग रचा कि हमेशा कलाम उसी एतेदाल व मेयार पर सादिर होता। जहां शुब्हा (संदेह) होता मुझ से दरियाफ्त कर (पूछ) लेते।

(अल मल्फ़ूज़, भाग: 2 पृष्ठ: 41)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ने "दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम" बरेली का सब से पहला मोहतमीम (व्यवस्थापक) आप ही को बनाया । आप ने अपना एक छापाखाना भी खोला था जहाँ आला हज़रत और अहले सुन्नत के दूसरे उलमा की किताबें छपती थीं । वहीं से "बहारे बे ख़िज़ाँ" नामी एक पर्चा और "रोज़ अफ़ज़ुँ" नामी साप्ताहिक पत्रिका आप की निगरानी में निकलता था।

आप एक अच्छे शायर होने के साथ एक अच्छे साहित्यकार भी थे। चूंकि आप को शायरी से कुछ ज़्यादा ही लगाव था इसलिए किताबें लिखने की तरफ बहुत ज़्यादा ध्यान नहीं दिया फिर भी आप की लगभग आठ किताबें छप चुकी है जिनका उर्दू अदब में बहुत महत्त्व और एक अलग ही स्थान है।

आपकी कुछ मशहूर नात की पंक्तियाँ

आसमां गर तेरे तलवों का नज़ारा करता
रोज़ इक चाँद तसद्दुक़ में उतारा करता

तुम्हारा नाम मुसीबत में जब लिया होगा
हमारा बिगड़ा हुआ काम बन गया होगा

दर्दे दिल मुझे अता कर या रब
दे मेरे दर्द की दावा या रब

सैरे गुलशन कौन देखे दश्ते तैबा छोड़ कर
सुए जन्नत कौन जाए दर तुम्हारा छोड़ कर

ऐ दीने हक़ के रहबर तुम पर सलाम हर दम
मेरे शफ़ी-ए-महशर तुम पर सलाम हर दम

असीरों के मुश्किल कुशा ग़ौसे आज़म
फ़क़ीरों के हाजत रवा ग़ौसे आज़म

दिल दर्द से बिस्मिल की तरह लौट रहा हो
सीना पे तसल्ली को तेरा हाथ धरा हो

अजब रंग पर है बहारे मदीना
कि सब जन्नतें हैं निसारे मदीना

वफ़ात : **रमज़ानूल मुबारक के महीने में 1326 हि. \ 1908 ई. में आप की वफ़ात हुई। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ने आप का जनाज़ा पढ़ाया और अपने पुश्तैनी क़ब्रिस्तान में दफन हुए।**

رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

मौलाना मोहम्मद रज़ा ख़ान ﷺ

जन्म : आप का जन्म 1301 हि. \ 1884 ई. में बरेली में हुआ। आप अल्लामा नक़ी अली ख़ान ﷺ के सब से छोटे बेटे थे। जब आप चार वर्ष के थे तो आप के पिता गुज़र गए।

आप के पिता ने आपकी बिस्मिल्लाह ख़ानी कराई थी। अपने बड़े भाई आला हज़रत ﷺ से शिक्षा प्राप्त की। जब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ के पास बहुत ज़्यादा इस्तिफ़्ता (शरीअत के बारे में जानकारी के लिए लोगों के सवालात) आने लगे तो विरासत से संबंधित फतवे आप लिखा करते थे क्यूँकि इस विषय में आप की अच्छी पकड़ थी।

मौलाना मोहम्मद रज़ा ख़ान ﷺ अपनी जागीर के साथ आला हज़रत की जागीर की भी देख भाल करते थे। खेती बारी के अलावा घर की सारी ज़िम्मेदारी आप ही निभाते थे। आप अपने पिता समान बड़े भाई आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ को घरेलू ज़िम्मेदारियों से छुटकारा देकर दीन की ख़िदमत के लिए छोड़ दिये थे यहाँ तक कि उनकी सारी लड़कियों की शादी की ज़िम्मेदारी भी आप ही के सर थी जिस को आप ने अच्छे ढंग से निभाया। आला हज़रत भी आप पर बहुत विश्वास और भरोसा करते थे इसलिए घरेलू मामलों में आप को पूरा अधिकार दे दिया था।

घरेलू काम काज और खेती बारी के साथ आप इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ की किताबों को भी देखते और उनकी पुष्टि करते थे। आला हज़रत ﷺ की बहुत सी किताबों पर आप के हस्ताक्षर मौजूद है।

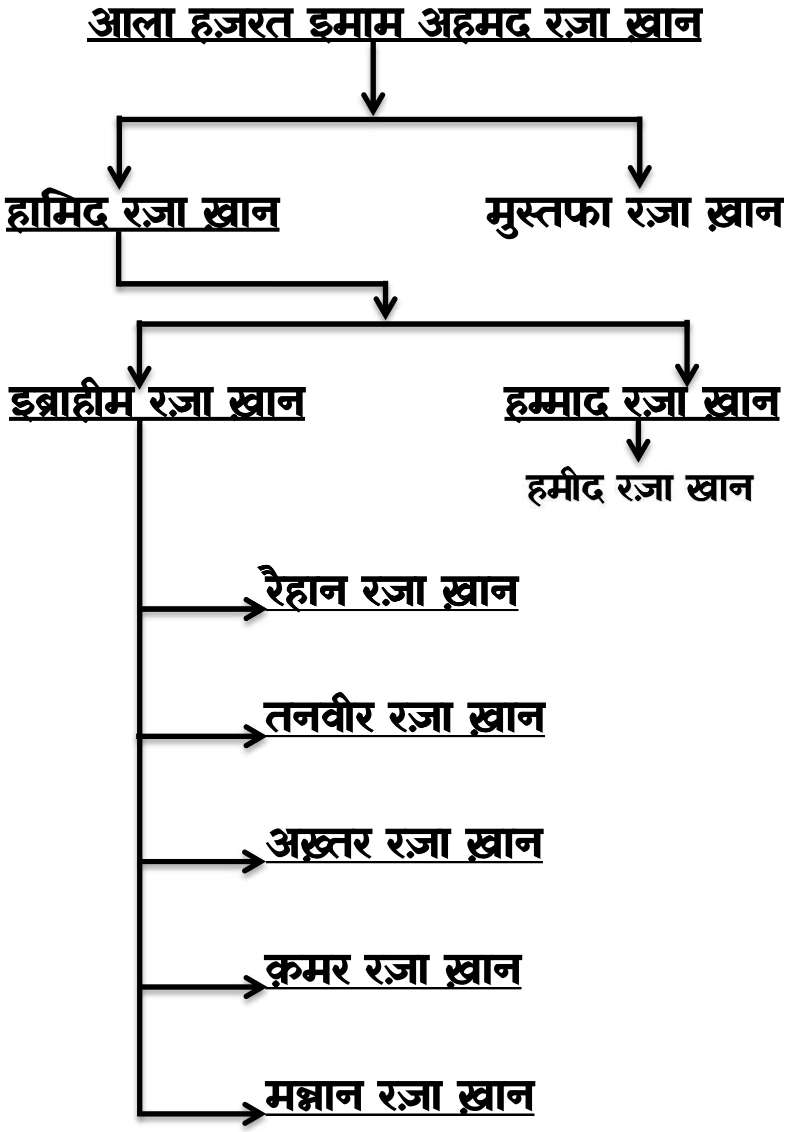
वफ़ात : 15 अक्तूबर 1939 ई. में आप की वफ़ात हुई और पुश्तैनी क़ब्रिस्तान बरेली में दफन हुए।

अध्याय ३......

वंशज

55………....77

वंशावली 2 : वंशज


आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान
हामिद रज़ा ख़ान
मुस्तफा रज़ा ख़ान
इब्राहीम रज़ा ख़ान
हम्माद रज़ा ख़ान
हमीद रज़ा खान
रैहान रज़ा ख़ान
तनवीर रज़ा ख़ान
अख़्तर रज़ा ख़ान
क़मर रज़ा ख़ान
मन्नान रज़ा ख़ान

हुज्जतुल इस्लाम
मुफ़्ती हामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ

जन्म : हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती हामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ का जन्म 1875 ई. \ 1292 हि. रबीउल अव्वल के महीने में बरेली शरीफ में हुआ। परिवार के रीति रिवाज के अनुसार अक़ीक़ा में आप का नाम मोहम्मद और उर्फी नाम हामिद रज़ा रखा गया। हुज्जतुल इस्लाम के उपनाम से जाने जाते हैं।

शिक्षा : आप ने अपने पिता आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ से शिक्षा प्राप्त की और केवल 19 वर्ष की उम्र में अपनी शिक्षा पूरी कर ली। पिता के अलावा अल्लामा मोहम्मद सईद मक्की, सैयद अहमद मदनी और अल्लामा ख़लील ख़रबूतती رحمہم اللہ से भी सनद हासिल है।

बैअत व ख़िलाफ़त : आप हज़रत शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मारहरवी رحمۃ اللہ علیہ के मुरीद और खलीफा हैं। साथ ही आप को अपने वालिद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ से भी इजाज़त व ख़िलाफ़त मिली थी।

(तज़किरा क़ादरिया रज़विया, पृष्ठ: 526)

तसनीफ व तालीफ: आप एक अच्छे शायर होने के साथ एक अच्छे लेखक भी थे। "तज़किरा क़ादरिया रज़विया" में आप की पंद्रह किताबों का नाम लिखा है जिन में 500 से अधिक फतावा के साथ "फतावा हामिदिया" भी शामिल है।

औसाफ व कमालात: हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती हामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ सिलसिला आलिया क़ादरिया रज़विया के चालीसवें इमाम थे। अपने पिता की तरह सभी ख़ूबी आप में थी। तक़वा व तहारत और

परहेज़गारी में अपनी मिसाल आप थे। आप सारे विषय विशेष रूप से हदीस और तफ़सीर के एक बेहतरीन अध्यापक थे। अरबी साहित्य में आप का एक अलग मक़ाम था। शेर व शायरी से भी आप का रिश्ता मज़बूत था। भाषण देने और तक़रीर करने के आप माहिर थे। आप के पिता आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷺ को जब किसी जलसे की दावत मिलती और वह किसी काम में व्यस्त होते तो आप ही को भेजते थे। जब आप हज के लिए गए थे तो सैयद हुसैन दब्बाग़ और सैयद मालकी तुर्की ने आप को देख कर कहा था :

हम ने हिंदुस्तान के अतराफ़ व अकनाफ में हुज्जतुल इस्लाम जैसा फ़सीह व बलीग़ नहीं देखा।

(तज़किरा क़ादरिया रज़विया, पृष्ठ: 530)

हज़रत अशरफी मियां किछौछवी ﷺ से बड़ी मोहब्बत करते थे, उन को आप ही ने "शबीहे ग़ौसे आज़म" कहा था। इन के अलावा उलमा-ए-अहले सुन्नत में मोहद्दीसे आज़म हिन्द, सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी, सदरूश शरिया मौलाना अमजद अली और जामिया अशरफिया मुबारकपुर के संस्थापक हाफिज़े मिल्लत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दीस मुरादाबादी ﷺ से आप के बहुत गहरे संबंध थे।

आप खूबसूरत तो थे ही शराफत और तक़वा व तहारत ने आपकी शख़्सियत में चार चाँद लगा दिया था। आप की खूबसूरती का आलम यह था कि देखने वाला आप का चेहरा देख "हुज्जतुल इस्लाम" (इस्लाम की दलील) पुकार उठता। बहुत से ग़ैर मुस्लिम ने तो केवल आप का चेहरा देख कर इस्लाम धर्म को कबूल कर लिया।

ख़िदमात \ महत्त्वपूर्ण सेवा : हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती हामिद रज़ा ख़ान ﷺ ने अपना पूरा जीवन दीन व मिल्लत और धर्म की सेवा करने में बीता दिया। ख़ुद आप के पिता आला हज़रत आप

के काम और ख़िदमात को हमेशा सराहते और आप पर गर्व और नाज़ करते थे।

आप ने लगातार पचास सालों तक "फ़िक़ह और इफ़्ता" की सेवा की और मुसलमानों के धार्मिक समस्याओं को हल करते रहे।

आप ने अहले सुन्नत व जमाअत की ख़ातिर गाँव गाँव और शहर शहर का दौरा किया और बद अक़ीदों का रद्द और उनसे मुनाज़रा करके भोले भाले मुसलमानों को उनके जाल में फँसने से रोका। इसी तरह "शुद्धि तहरीक" के ख़िलाफ़ जी तोड़ कोशिश करके लाखों मुसलमानों के ईमान को बचाया।

आप ने मुसलमानों के आर्थिक विकास और उन्हें सामाजिक रूप से विकसित करने के लिए मुरादाबाद में 1925 ई. में "ऑल इंडिया सुन्नी कान्फ्रेंस" करवाई थी जिस में आप के द्वारा रखा गया प्रस्ताव मुसलमानों को शिक्षा और व्यापार के मैदान में आगे बढ़ाने के लिए काफी महत्त्वपूर्ण था। आज भी अगर उस प्रस्ताव के अनुसार काम हो तो मुसलमानों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधरते देर नहीं लगेगी।

करामात : आप साहिबे करामात बुज़ुर्ग थे। आप की बहुत सी करामात किताबों में लिखी हैं, हम यहाँ उन में से कुछ का ज़िक्र करते हैं :

क़ब्र असली जगह पर नहीं : एक बार आप बनारस गए हुए थे, "बरतला मस्जिद" में नमाज़ पढ़ने के बाद मस्जिद में मौजूद एक क़ब्र पर फातिहा पढ़ने लगे, कुछ देर बाद अचानक आप पीछे हटे और वहाँ मौजूद लोगों से बोले यह क़ब्र अपनी असली जगह पर नहीं है। यह सुन कर लोग कहने लगे कि जी हुज़ूर ! दर असल यह क़ब्र बीच मस्जिद में थी जिसके कारण नमाज़ की सफ़्फ़ (पंक्ति) सही ढंग से नहीं लग पा रही थी इसलिए ताबूत को खिसका दिया गया था। आप ने

कहा ऐसा करना ठीक नहीं है फिर उसको असली जगह पर रखने का आदेश दिया।

गुस्ताख़ी की सज़ा: एक देवबन्दी मौलवी ने बरेली के एक जलसे में आप ﷺ के बारे में कहा कि मौलाना हामिद रज़ा "हामिद" नहीं बल्कि "जामिद" (स्थिर) है, थोड़ी देर बाद ख़ुद उसकी अपनी ज़ुबान जामिद हो गई और वह उसी वक़्त स्टेज से गिरा और मर गया। मरने से पहले जल्दी में काग़ज़ कलम मंगवा कर लिखा कि "मैं मौलाना हामिद रज़ा ख़ान साहब की बेअदबी से तौबा करता हूँ"। (माहनामा आला हज़रत अप्रैल 1986 ई.)

(तज़किरा क़ादरिया रज़विया, पृष्ठ: 539-540)

नमूना कलाम

आप अरबी, फारसी उर्दू तीनों ज़बान में नात कहते थे। हम यहाँ उदाहरण के लिए केवल एक नात शरीफ की कुछ पंक्तियाँ लिखते हैं :

मोहम्मद मुस्तफा नूरे ख़ुदा नामे ख़ुदा तुम हो
शहे ख़ैरुलवरा शाने ख़ुदा सल्ले अला तुम हो

ग़रीबों दर्दमंदों की दवा तुम हो दुआ तुम हो
तबीबे दर्दे दिल तुम हो मेरे दिल की दवा तुम हो

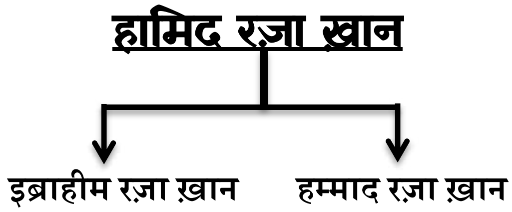
हबीबे किबरिया तुम हो इमामुल अम्बिया तुम हो
मोहम्मद मुस्तफा तुम हो मोहम्मद मुज्तबा तुम हो

ख़ुदा कहते नहीं बनती जुदा कहते नहीं बनती
ख़ुदा पर इसको छोड़ा है वही जाने कि क्या तुम हो

अना मिन हामिद व हामिद रज़ा मिन्नी के जलवों से
मोहम्मद अल्लाह रज़ा हामिद हैं और हामिद रज़ा तुम हो

वफ़ात: 17 जुमादिलउला 1362 हि. \ 23 मई 1943 ई. ईशा नमाज़ के बीच "तशह्हुद" की हालत में 10:45 में आप का इन्तेक़ाल हुआ। मोहद्दीसे आज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अहमद رحمۃ اللہ علیہ ने जनाज़ा पढ़ाया और "गुंबदे रज़ा" में दफन हुए।

संतान : आप के दो बेटे और चार बेटियाँ हुईं। बड़े बेटे का नाम इब्राहीम रज़ा ख़ान उर्फ जिलानी मियाँ और छोटे बेटे का नाम हम्माद रज़ा ख़ान उर्फ नुमानी मियाँ था। (हम्माद रज़ा ख़ान उर्फ नुमानी मियाँ का पूरा परिवार पाकिस्तान में है)



رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द
अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

जन्म: मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का जन्म 22 ज़िल्हिज्जा 1310 हि. \ 7 जुलाई 1893 ई. जुमा के दिन सुबह के वक़्त मोहल्ला रज़ा नगर सौदागरान बरेली में हुआ। आप का असली नाम मोहम्मद है, इसी नाम से आप का अक़ीक़ा हुआ। आप के पिता आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ने आप का उर्फ़ी नाम "मुस्तफा रज़ा" रखा और इसी नाम से आप ज़्यादा मशहूर हुए।

शिक्षा : आप अपने पिता आला हज़रत, अपने दोनों चाचा अल्लामा हसन रज़ा ख़ान, अल्लामा मोहम्मद रज़ा ख़ान और बड़े भाई हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہم से शिक्षा प्राप्त की। जब मदरसा मंज़रे इस्लाम खुला तो आप उसमें भी पढ़े लेकिन विशेष कर सारी पढ़ाई अपने वालिद साहब ही के पास पूरी की। 18 वर्ष की उम्र में सभी उलूम व फ़ुनून (ज्ञान व कला) हासिल करने के बाद 1910 ई. \ 1328 हि. में मंज़रे इस्लाम बरेली शरीफ से आप को फराग़त मिली।

(जहाने मुफ़्ती आज़म हिन्द, पृष्ठ: 104)

बैअत व ख़िलाफ़त: 25 जुमादिलउखरा 1311 हि. 6 महीना 3 दिन की उम्र में शाह अबुल हुसैन नूरी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ने अपनी उंगली मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के मुंह में डाली जिस को आप चूसने लगे। उसी समय हज़रत शाह अबुल हुसैन नूरी मियाँ ने आप को मुरीद किया और सभी सिलसिलों की ख़िलाफ़त और इजाज़त देकर कहा कि :

> यह बच्चा दीन व मिल्लत की बड़ी ख़िदमत करेगा और मख़लूक़े ख़ुदा को इसकी ज़ात से बहुत फ़ैज़ पहुंचेगा। यह बच्चा वली है। इसकी निगाहों से लाखों गुमराह इंसान दीने

हक़ पर क़ाएम होंगे। यह फ़ैज़ का दरिया बहाएगा।

(जहाने मुफ़्ती आज़म हिन्द, पृष्ठ: 103)

आप को अपने पिता आला हज़रत ﷺ से भी सभी सिलसिलों की ख़िलाफ़त और इजाज़त हासिल है।

औसाफ व कमालत: रज़वी परिवार में आला हज़रत के बाद अगर किसी को सब से ज़्यादा शोहरत मिली तो वह मुफ़्ती आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान ﷺ हैं। आप की शोहरत का आलम यह था कि 1391 हि. में जब आप तीसरी बार हज के लिए गए तो मक्का और मदीना शरीफ के सैकड़ों लोग आप से मुरीद हुए और बड़े बड़े उलमा-ए-किराम आप से इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल किए।

आप एक अच्छे आलिम, बड़े मुफ़्ती, बेमिसाल मुत्तक़ी, माहिर उस्ताद और मुसलमानों के धार्मिक नेतृत्व करने वाले महान रहबर व पेशवा थे ।

अरबी, उर्दू और फारसी के एक अच्छे साहित्यकार होने के साथ शायरी से भी अच्छी ख़ासी दिलचस्पी थी।

अपने पिता की तरह फ़तवा लिखने का काम आप को बहुत पसंद था। आप के पिता आला हज़रत ﷺ को आप की फ़िक़्हि सूझ बुझ पर इतना भरोसा था कि उन्होने अपनी ज़िंदगी में सैकड़ों मसले आप से लिखवाये और उसकी पुष्टि की।

तक़्वा व तहारत और परहेज़गारी में आप का कोई जवाब नहीं था। आज भी आप के चाहने वाले बड़े गर्व से कहते हैं :

मुत्तक़ी बन कर दिखाये इस ज़माने में कोई
एक मेरे मुफ़्ती-ए-आज़म का तक़्वा छोड़ कर

1347 हि. \ 1928 ई. के उर्से रज़वी में हज़ारों लोगों की भीड़ और सैकड़ों उलमा-ए-किराम व मुफ़्तीयाने एज़ाम की उपस्थिती में आप को "मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द" का ख़िताब मिला।

(जहाने मुफ़्ती आज़म हिन्द, पृष्ठ: 126)

ख़िदमात: 18 वर्ष की उम्र में आप ने पहला फ़तवा लिखा, जबकि आला हज़रत के ख़लीफा मलेकुल उलमा अल्लामा ज़फरुद्दीन बिहारी ﷺ उस इस्तिफ़्ता का जवाब लिखने के लिए "फतावा रज़विया" का अध्ययन ही कर रहे थे। जब आला हज़रत ﷺ को यह बात मालूम हुई तो बहुत ख़ुश हुए और पाँच रूपये पुरस्कार दिये और बोले :

तुम्हारी मोहर बनवा देता हूँ, अब फ़तवा लिखा करो।

(जहाने मुफ़्ती आज़म हिन्द, पृष्ठ: 126)

तब से लेकर आखिर उम्र तक पूरे 74 वर्ष फ़तवा लिखने में लगे रहे और दीन की ख़िदमत करते रहे।

दीन की दावत व तबलीग़ के लिए आप देश विदेश जाया करते थे और लाखों की संख्या में लोग आप के मुरीद थे और बहुत से ग़ैर मुस्लिमों ने आप के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया।

1920 ई. में जब "शुद्धि तहरीक" हज़ारों भोले भाले मुसलमानों को शुद्धिकरण के नाम पर बेदीन और मुर्तद बना रही थी, हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷺ ने मुसलमानों के ईमान की रक्षा की और इस आंदोलन का नाम व निशान मिटा डाला। यह आप का ऐसा महान कारनामा था जिसने लाखों लोगों को मुर्तद होने से बचा लिया।

तसनीफ व तालीफ: आप के सिर बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ थीं जिसके कारण आप बहुत व्यस्त रहा करते थे फिर भी आप 39 किताबों के लेखक हैं जिनमें "फतावा मुफ़्ती-ए-आज़म" भी शामिल है जिसमें आप के 500 से अधिक फतवे लिखे हुए हैं।

शायरी: एक बड़े मुफ़्ती होने के साथ आप एक अच्छे शायर भी थे। शायरी में आप अपना तख़ल्लुस (उपनाम) "नूरी" लिखते थे। अपने

पिता की तरह आप को भी नाते नबी लिखने का शौक़ था। आप की लिखी नातों का मजमूआ "सामाने बख़्शिश" के नाम से छपा है। इस पुस्तक की कुछ मशहूर नात की शुरू की पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं :

नमूना कलाम

कुछ ऐसा करदे मेरे किरदिगार आँखों में
हमेशा नक़्श रहे रुए यार आँखों में

हबीबे ख़ुदा का नज़ारा करूँ मैं
दिल व जान उन पर निसाराँ करूँ मैं

बख़्ते ख़ुफ़्ता ने मुझे रौज़े पे जाने ना दिया
चश्म व दिल सीने कलेजे से लगाने ना दिया

वस्फ़ क्या लिखे कोई उस महबते अनवार का
मेहर व मह में जलवा है जिस चाँद से रुख़सार का

अरशे आज़म पर फ़रेरा है शहे अबरार का
बजता है कौनैन में डंका मेरे सरकार का

तू शमा रिसालत है, आलम तेरा परवाना
तू माहे नबूवत है ऐ जलवा-ए-जानाना

करामात : मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ एक साहिबे करामात बुज़ुर्ग थे। राज़ इलाहाबादी ने "मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द की करामात" के नाम से एक किताब लिखी है जिसमें आप की बहुत सी करामतों को बयान किया गया है। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

बारिश का रुक जाना : एक बार इलाहाबाद के "बोहरबा" गाँव में बहुत बड़ा जलसा था। जब उलमा-ए-किराम पहुंचे तो बादल चारों तरफ लगा हुआ था। ठीक जलसा के बीच में बून्दा-बूंदी होने

लगी और कुछ ही देर बाद तेज़ बारिश शुरू हो गई जिसके कारण सारे लोग जलसे से उठ कर जाने लगे। हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷺ यह देख दुआ के लिए हाथ उठाए तुरन्त बारिश रुक गई। फिर पूरी रात जलसा हुआ। सुबह सवेरे जब लोग जलसा से वापिस आए तो क्या देखते हैं कि चारों तरफ बारिश हो रही है, खेतों में पानी भरा हुआ है मगर जलसागाह में एक बूंद पानी नहीं है। यही हाल दूसरी रात के जलसे में भी हुआ कि चारों ओर बारिश ही बारिश लेकिन जलसे में बैठे लोगों को बारिश की ख़बर ही नहीं, सवेरे खेतों में भरे पानी को देख कर पता चल रहा है कि रात जम कर बारिश हुई है।

(मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द की करामात, पृष्ठ: 124-125)

ट्रेन का रुक जाना : एक बार आप नागपुर से आकोला जा रहे थे। रास्ते में मग़रिब की नमाज़ का वक़्त हो गया। उस डब्बा में कई मुसलमान भी थे जिनमें दो पैंट कोट में मॉडर्न मुसलमान भी थे। आप ने पूछा कि अब गाड़ी कहाँ रुकेगी मैं नमाज़ पढ़ूँगा। उस समय गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी हुई थी, लोगों ने कहा कि यह मेल गाड़ी है बहुत देर बाद रुकती है। आप ने फरमाया फिर इसी स्टेशन पर उतर कर नमाज़ पढ़ते हैं। एक मॉडर्न मुसलमान बोल पड़ा कि "अरे आप चलती गाड़ी पर नमाज़ पढ़ लीजिये, क्यूँ प्लेट फार्म पर उतर रहे हैं, ट्रेन आप का इंतज़ार नहीं करेगी"। यह सुन कर आप को गुस्सा आ गया और आप ने कहा कि अगर मेरी नमाज़ का इंतज़ार ट्रेन नहीं करेगी तो क्या हुआ ...... खुदा हाफिज़ .... यह कह कर मुसल्ला और लोटा लेकर ट्रेन से उतर गए। आप के साथ जो लोग थे वह भी नीचे उतर कर आप के साथ नमाज़ पढ़ने लगे। आप और आप के साथी नमाज़ पढ़ ही रहे थे के ट्रेन चलने लगी। ट्रेन में सवार मॉडर्न आदमी फबती कसने लगा कि मियां की गाड़ी गई ! मियां की गाड़ी गई ! उन बदनसीबों को क्या पता कि यह कौन हज़रत हैं। नमाज़ पढ़ने के बाद

आप सुकून से वहीं बैठ गए।

आप के साथी तो चिंतित थे कि सारा सामान ट्रेन ही में रह गया अब क्या होगा ? वहाँ मौजूद दूसरे लोग बातें कर रहे थे कि देखो मौलाना नमाज़ के लिए उतरे और गाड़ी चली गई । लेकिन आप चुपचाप सुकून से बैठे रहे जैसे कुछ हुआ ही नहीं। अचानक सामने से गार्ड भागा भागा आया और कहा हुज़ूर आगे गाड़ी रुकी हुई है जल्दी चलिये। आप ने कहा गाड़ी रुकी है या इंजन ख़राब हो गया है ? गार्ड गिड़गिड़ाने लगा कि हज़रत ! इंजन ही नहीं चलता, माफ कर दीजिये यह मेल गाड़ी है इसलिए हम रोक नहीं सकते थे। स्टेशन मास्टर ने कहा है कि दूसरा इंजन लगाना पड़ेगा । आप ने फरमाया कि कोई ज़रूरत नहीं । तुम गाड़ी पीछे प्लेट फार्म की तरफ लाओ । इंजन बदलने की कोई ज़रूरत नहीं। मेरे डब्बे में एक नाम का मुसलमान बैठा है जो कहता है कि क्या गाड़ी इंतज़ार करेगी ?

आप के कहने के अनुसार जैसे ही पीछे प्लेट फार्म की तरफ गाड़ी लाई गई इंजन की ख़राबी दूर हो गई। यह देख सारे लोग हैरत करने लगे और वह दोनों मुसलमान आप से माफी मांगने लगे, आपने उन्हें माफ कर दिया।

हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द رحمۃ اللہ علیہ ने नमाज़ के लिए ट्रेन छोड़ दी लेकिन ट्रेन आप को नहीं छोड़ी बल्कि साथ लेकर ही गई।

(मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द की करामात, पृष्ठ: 102-103)

वफ़ात: आप 91 वर्ष की उम्र में 14 मोहर्रम 1402 हि. \ 13 नवम्बर 1981 ई. रात 1:40 मिनट पर कलमा पढ़ते हुए इस दुनिया से चल बसे । सरकारे कलाँ सैयद मुख़्तार अशरफ किछौछवी رحمۃ اللہ علیہ ने जनाज़ा पढ़ाया और गुंबदे रज़ा में अपने पिता आला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ के बग़ल में दफन हुए।

मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द
अल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द अल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ान उर्फ जिलानी मियां का जन्म 1325 हि. \ 1906 ई. को बरेली में हुआ।

आप के दादा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ने बड़े धूमधाम से आप का अक़ीक़ा करवाया जिसमें परिवार के लोगों के साथ दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम के तालिबे इलमों को भी आम दावत दी।

आप ने घर में ही अपनी माँ से क़ुरान शरीफ और उर्दू की किताबें पढ़ीं। आगे की पढ़ाई दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम बरेली से की और 1344 हि. \ 1925 ई. में आप की दस्तार बंदी हुई।

आप अपने दादा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के मुरीद थे और उन्हीं से आप को इजाज़त व ख़िलाफ़त भी मिली थी। साथ ही आप के पिता हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ और चाचा मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ने भी अपनी इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फरमाई थी।

आप की शादी 1347 हि. में अपने चाचा मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की लड़की से हुई।

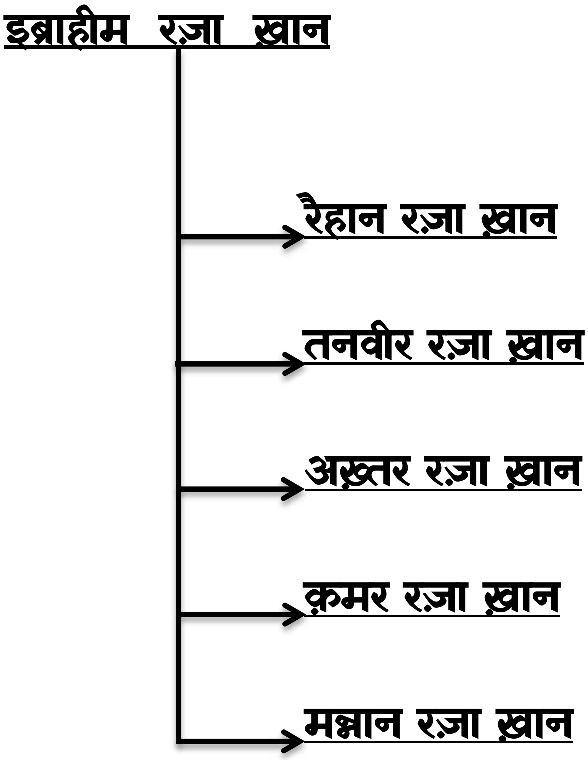
जवानी में आप को घुड़सवारी, तीरंदाज़ी और बन्दूक चलाने का बहुत शौक़ था। वसीयत के अनुसार 1367 हि. में दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम के व्यवस्थापक बने और वर्षों तक मेहनत और लगन के साथ अच्छे ढंग से चलाते रहे।

1372 हि. \ 1952 ई. में हज किए और हज के बाद दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम में शिक्षा देने लगे। आप हदीस की बड़ी बड़ी किताबें जैसे मुस्लिम शरीफ, तिर्मिज़ी शरीफ, मिशकात शरीफ आदि

पढ़ाते थे। पठन पाठन के साथ आप ने दर्जनों किताबें भी लिखी है।

11 सफर 1385 हि. \ 12 जून 1965 ई. में आप का इंतेक़ाल हुआ। मुफ़्ती अफ़ज़ल हुसैन मुंगेरी ने जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई और गुंबदे रज़ा में दफन हुए।

संतान: आप की आठ औलादें थीं जिनमें पाँच लड़के और तीन लड़कियां शामिल हैं।



ताजुश्शरीया अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी ﷫

जन्म: ताजुश्शरीया अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी ﷫ का जन्म 26 मोहर्रम 1362 हि. \ 2 फ़रवरी 1943 ई. मंगलवार को सौदागरान मोहल्ला बरेली शरीफ में हुआ। "मोहम्मद" नाम पर अक़ीक़ा हुआ, पुकारने के लिए "मोहम्मद इस्माइल रज़ा" और उर्फी नाम "मोहम्मद अख़्तर रज़ा" रखा गया।

शिक्षा: जब आप चार साल चार महीना चार दिन के हो गए तो पिता मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द ﷫ ने "बिस्मिल्लाह ख़ानी" कराई जिसमें मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷫ और हिन्दुस्तान के बड़े बड़े उलमा-ए-किराम शामिल हुए।

आप ने अपने घर में अपनी वालिदा माजिदा से क़ुरान और उर्दू की किताबें पढ़ीं उसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम में दाख़िल हुए। 1952 ई. में एफ़आर इस्लामिया इंटर कॉलेज से हिन्दी और अँग्रेज़ी की शिक्षा प्राप्त की।

दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम के उस्ताद मौलाना अब्दुत्तौव्वाब मिस्री की सलाह से उच्च शिक्षा के लिए 1963 ई. में "अज़हर विश्वविधालय" मिस्र गए जहां आप ने अपनी बाक़ी पढ़ाई पूरी की।

जब आप मिस्र ही में थे तो आप को अपने पिता की वफ़ात की ख़बर मिली लेकिन उस समय इतना लंबा सफर करके आना आसान नहीं था इसलिए आप नहीं आ सके और अपनी पढ़ाई में लगे रहे लेकिन इसका आप को बहुत दुख हुआ।

लगातार तीन साल तक अज़हर विश्वविधालय में पढ़ाई करने के बाद 1966 ई. में जब आप लौटे तो मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷫ ने उलमा-ए-किराम और परिवार के सभी सदस्यों के साथ बरेली रेल्वे

स्टेशन पर फूलों के हार और गजरों से ऐसा शानदार स्वागत किया कि पूरा प्लेट फार्म महक उठा।

बैअत व ख़िलाफ़त: 20 साल की उम्र में आप अपने नाना हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷫ के हाथ पर मुरीद हुए। उसी समय हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷫ आप को सभी सिलसिलों की इजाज़त और ख़िलाफ़त भी दे दिये। उनके अलावा आप को अपने पिता मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द ﷫, बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती अब्दुल बाक़ी जबलपुरी ﷫, सैयद आले मुस्तफा सैयद मियां मारहरवी ﷫ और सैयद मुस्तफा हैदर हसन मियां ﷫ से भी सभी सिलसिलों में इजाज़त और ख़िलाफ़त हासिल है।

औसाफ व कमालात: रज़वी परिवार में आला हज़रत और मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द के बाद हुज़ूर अज़हरी मियां को जो शोहरत नसीब हुई वह किसी को नहीं मिली। आप में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान ﷫ के इल्म और मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷫ के तक़वा व परहेज़गारी की झलक साफ दिखती थी। इसी कारण आप को "वारिसे उलूमे आला हज़रत" और "जाँनशीने मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द" कहा जाता है। आप धर्म और मसलक के पासबान और मुसलमानों के एक महान लीडर थे।

अपने वक़्त के बड़े बड़े राजनेता आप के पास बड़े बड़े पद के लिए प्रस्ताव लेकर आए लेकिन आप ने उन सब को यह कह कर ठुकरा दिया कि "मैं एक धार्मिक आदमी हूँ मुझे इन पदों की कोई आवश्यकता नहीं"।

अहले सुन्नत व जमाअत के एक बहुत बड़े मुफ़्ती और "बुख़ारी शरीफ" के अनुवादक मुफ़्ती शरीफ़ूल हक़ अमजदी ﷫ आप के बारे में लिखते हैं :

> हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द को अपनी ज़िंदगी के आख़री पच्चीस सालों में जो मक़्बूलियत और हरदिल अज़ीज़ी हासिल

हुई वह आप के विसाल के बाद अज़हरी मियां को बड़ी तेज़ी के साथ इब्तेदाई सालों में ही हासिल हो गई, बहुत जल्द लोगों के दिलों में अज़हरी मियां ने अपनी जगह बना ली।

(तजल्लीयाते ताजुश्शरिया, पृष्ठ: 600)

अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही लिखते हैं :

ख़ानवादे रज़विया में इस वक़्त इल्म व फ़ज़ल, फ़िक़्ह व इफ्ता के शोबे (विभाग) में अज़हरी मियां ही आबरुए ख़ानदान, नुमाइंदा-ए- ख़ानवादे रज़विया हैं जिन पर अहले सुन्नत को फ़ख़्र व नाज़ है.............अहले सुन्नत व जमाअत के लिए आप का दम ग़नीमत ही नहीं बल्कि बाइसे रहमत व बरकत है।

(तजल्लीयाते ताजुश्शरिया, पृष्ठ: 68)

ख़िदमात: जब आप "अज़हर विश्वविधालय" से पढ़ाई कर के घर आए तो कुछ ही दिनों बाद नाना मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ﷺ ने कहा:

अख़्तर मियां ! अब घर बैठने का वक़्त नहीं, यह लोग जिन की भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते, अब तुम इस (फ़तवा लिखने के) काम को अंजाम दो, मैं (दारुल इफ्ता) तुम्हारे सुपुर्द (हवाले) करता हूँ।

तब से लेकर आख़री उम्र लगभग 51 सालों तक दारुल इफ्ता का काम करते रहे साथ ही लगातार बारह वर्षों तक आप ने दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम में पढ़ाने का काम भी किया।

दावत व तबलीग़ के लिए आप ने दर्जन भर देश का दौरा किया और पूरी दुनिया में दो करोड़ से अधिक आप के मुरीद हैं। आप की दावत व तबलीग़ से प्रभावित हो कर दर्जनों ग़ैर मुस्लिमों ने आप के हाथ पर इस्लाम कबूला है।

जब कॉंग्रेस सरकार ने नसबंदी का नियम पास किया और सभी के लिए नसबंदी अनिवार्य कर दिया तो आप ने इसके विपरीत फ़तवा

देकर मुसलमानों को इस गुनाह से बचाया। इस फ़तवा का समर्थन आप के नाना हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द ने भी किया था।

आप के जीवन का एक महान कारनामा जामियतुर रज़ा भी है जिस की नींव 29 मई 2000 ई. में डाली गई और आज एक बेहतरीन इस्लामी महाविद्यालय के रूप में मौजूद है। इस के अलावा देश विदेश की कई बड़ी संस्था की सरपरस्ती भी करते रहे।

आप ने बाबरी मस्जिद के लिए देश में चल रहे आंदोलन के भी समर्थन का एलान किया था और इस के लिए होने वाली कान्फ्रेंस में भाषण और सरकार को ज्ञापन देकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

तसनीफ व तालीफ: हमारे एक प्रिय दोस्त और नौजवान आलिमे दीन मौलाना अताउन्नबी हुसैनी मिस्बाही अपनी किताब "हुज़ूर ताजुश्शरिया: हयात और तसनीफ़ी ख़िदमात" में "सवानेहे ताजुश्शरिया" के हवाले से आप की 61 उर्दू, अरबी और अग्रेज़ी किताबों की सूची बनाई है और हर एक का विस्तार से विवरण किया है। जिनमें 35 उर्दू, 22 अरबी और 4 अँग्रेजी भाषा में किताबें हैं।

इनमें बहुत सी किताबें हिंदुस्तान, पाकिस्तान, सऊदी अरब, दमिश्क (सीरिया) और साउथ अफ्रीका से छप चुकी हैं और कुछ अभी छपनी बाक़ी है।

शायरी: हुज़ूर ताजुश्शरिया अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी पढ़ने के समय से ही शायरी किया करते थे। उन्नीस वर्ष की उम्र में आप ने पहली नात शरीफ लिखी। आप की शायरी के बारे में मौलाना तौफ़ीक़ अहसान बरकाती लिखते हैं :

> हुज़ूर अज़हरी मियां ने अरबी, फारसी और उर्दू तीनों ज़बानों में तबअ आज़माई की, शेर व सुख़न से आप की दिलचस्पी ज़माना-ए-तालिबे इल्मी से ही रही....शुरू शुरू में अपने

असातेज़ा और वालिद माजीद से अपने कलाम की इसलाह लेते रहे, आप की नातें, नज़्में "महनामा आला हज़रत" और महनामा "नूरी किरण" बरेली में शाए होती रहीं।

(तजल्लीयाते ताजुश्शरिया, पृष्ठ: 474)

आप की नातों का मजमोंआ "सफीना-ए-बख़्शिश" पढ़ने से पता चलता है कि आप की नाते रसूल ﷺ की एक एक पंक्ति से मोहब्बते रसूल का दरिया बह रहा हो।

जब हम अहदे रवां के मोहतात व मुमताज़ शायर हज़रत अख़्तर बरेलवी के कलाम का जाइज़ा लेते हैं तो लफ़्ज़ लफ़्ज़ और हरफ हरफ से इश्क़ व इरफान की ख़ुशबू फूटती और फैलती महसूस होती है और रूह झूम झूम जाती है।

(तजल्लीयाते ताजुश्शरिया, पृष्ठ: 507)

"सफीना-ए-बख़्शिश" से कुछ मशहूर नात की पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं :

नमूना कलाम

जहां बानी अता कर दें भरी जन्नत हिबा कर दें
नबी मुख़तारे कुल हैं जिस को जो चाहें अता कर दें

तेरे दामने करम में जिसे नींद आ गई है
जो फना ना होगी ऐसी उसे ज़िंदगी मिली है

मेरी मैयत पे ये अहबाब का रोना क्या है
शोर कैसा है ये और ज़ारी-ए-पैहम क्या है

संभल जा ऐ दिले मुज़्तर मदीना आने वाला है
लूटा ऐ चश्मे तर गौहर मदीना आने वाला है

बूल्हवस सुन ! सीम व ज़र बंदगी अच्छी नहीं
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

दूर ऐ दिल रहें मदीने से
मौत बेहतर है ऐसे जीने से

ग़ैर अपने हो गए जो हमारे बदल गए
नज़रें बदल गईं तो नज़ारे बदल गए

करामात: हुज़ूर ताजुश्शरिया ﷺ एक सच्चे आशिक़े रसूल, आलिमे बा अमल और वली-ए-बा करामत थे। दीन पर सख़्ती के साथ चलना आप की सब से बड़ी करामत थी। आप की कुछ करामतें निम्नलिखित हैं :

क़दम की बरकत: कर्नाटक के शहर हुबली में एक आदमी करोड़ों की लागत से एक आलीशान घर बनाया। जब रहने के लिए उस घर में गया तो रात में तेज़ आँधी और तरह तरह की आवाज़ें आने लगीं। लगभग हर रात का यही मामला था कि शाम होते ही आवाज़ आने लगती। मजबूर होकर उसने घर छोड़ दिया। इस बीच जिस को भी वह मकान भाड़े पर देता सब लोग उस डरावनी आवाज़ और आँधी के कारण डर कर घर छोड़ देते। कोई भी उस घर में रहने के लिए तैयार नहीं था इसलिए एक लंबे समय तक वह घर ख़ाली वीरान पड़ा रहा।

कुछ दिनों बाद हुज़ूर ताजुश्शरिया का हुबली का प्रोग्राम बना और आप वहाँ तशरीफ ले गए। घर के मालिक ने कमेटी वालों से बात चीत करके इस बात पर तैयार कर लिया कि हज़रत उसी घर में ठहरेंगे और मेहमान नवाज़ी की ज़िम्मेदारी उसकी होगी। जब हज़रत

हुबली आए तो कुछ घंटे उस घर में ठहरे और ईशा और फ़जर दो वक़्त की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़े। इस थोड़ी देर रुकने की यह बरकत हुई कि कहाँ की आँधी कहाँ का तूफान, सनसनाहट, गड़गड़ाहट और आवाज़ सब ख़त्म होगई। आज भी लोग उस घर में सुकून से रहते हैं और किसी को भी कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती है।

(तजल्लीयाते ताजुश्शरिया, पृष्ठ: 176)

बारिश होने लगी : एक बार आप दारुल उलूम हनफ़िया ज़ियाउल क़ुरान लखनऊ के दीक्षांत समारोह में गए हुए थे। उन दिनों वहाँ बारिश नहीं हो रही थी जिसके कारण लोग बहुत परेशान थे। कुछ लोग आप के पास आ कर कहने लगे हुज़ूर बारिश के लिए दुआ कर दीजिये। आपने "नमाज़े इस्तिसक़ा पढ़ी और दुआयें कीं। अभी दुआ कर ही रहे थे कि मूसलाधार बारिश होने लगी और सारे लोग भीग गए।

(हुज़ूर ताजुश्शरिया: हयात और तसनीफ़ी ख़िदमात, पृष्ठ: 40)

वफ़ात: हिजरी साल के अनुसार 77 वर्ष और ईस्वी साल के अनुसार 75 वर्ष की उम्र में 7 ज़िक़ादा 1439 हि. \ 20 जुलाई 2018 ई. जुमा मुबारक के दिन मग़रिब नमाज़ के वक़्त आप इस दुनिया से चले गए।

आप के इंतेक़ाल की खबर तुरंत पूरी दुनिया में फैल गई और उलमा से लेकर आम आदमी तक सभी को गहरा सदमा पहुंचा। हर तरफ से लोग शोक संवेदना और अपने अपने ढंग से अपने दुख व्यक्त करने लगे। हम में से सब लोग जानते थे कि आप एक महान और लोकप्रिय व्यक्ति हैं लेकिन इतने लोकप्रिय और मशहूर हैं आप के जाने के बाद पता चला। बड़े बड़े उलमा-ए-किराम और राजनीतिक स्तर के लोगों ने अफसोस का इज़हार किया।

8 ज़िक़ादा 1439 हि. \ 22 जुलाई 2018 ई. रविवार के दिन ग्यारह बजे आप के बेटे और जानशीन मौलाना असजद रज़ा ख़ान

साहब ने आप का जनाज़ा पढ़ाया। आप के जनाज़ा में लोगों की इतनी बड़ी संख्या थी कि शायद अब तक किसी धर्म गुरु के जनाज़ा में इतनी बड़ी संख्या रही हो।

अल्लाह तआला उनके और उनके पूरे परिवार के दरजात बुलंद फरमाए
और हम सभी लोगों पर उनका फैज़ान जारी रखे !
आमीन या रब्बल आलमीन !

समर मिस्बाही

18-08-2018 ई.

07-01-1440 हि.



शब्दकोष

उर्दू शब्द	अर्थ	पृष्ठ
अज़ीम	महान	39
अता	अनुदान	9
अमल	प्रक्रिया	10
अव्वल	प्रथम	51
अहमियत	महत्व	46
आबा व अजदाद	पूर्वज	13
आलम	दुनिया	65
इंतक़ाल	निधन	30
एतेदाल	मध्यम	51
औलाद व अमजाद	संतान / वंशज	13
क़बूल करना	स्वीकार करना	58
करामत	चमत्कार / दैवीय घटना	34
ख़िताब	उपनाम	63
ख़िदमात	सेवाएं	11
गुमराह	पथभ्रष्ट	62
गुलशन	फूलों का बग़ीचा	52
गुस्ताख़ी	अपमान	60
गौहर	रत्न, हीरा	74
चश्म व दिल	आँख एवं हृदय	65
चश्मे तर	भीगी आँख	74
ज़री-ए-पैहम	लगातार रोना	74
जलवा	झलक	61
जहां	दुनिया	74

उर्दू शब्द	अर्थ	पृष्ठ
ज़िक्र	उल्लेख	59
जैइद	प्रतिष्ठित	13
तआरुफ़	परिचय	13
तबलीग़	प्रचार	64
तबीब	वैध	60
तसद्दुक़	दान	52
तहरीक	आंदोलन	59
दर	चौखट	52
दश्त	जंगल / मैदान	52
दस्तूर	नियम	48
दौरा	यात्रा	59
नज़ारा	दृष्टि	75
नफरत	घृणा	38
नाकाम	विफल	25
पेश करना	प्रस्तुत करना	17
फआल	सक्रिय	17
फ़सीह	परिष्कृत	58
फ़ैज़	लाभ	62
फैज़ान	प्रेरणा	9
बख़्ते ख़ुफ़्ता	सोया हुआ भाग्य	65
बुनियाद	नींव	21
बेश बहा	बहुमूल्य	22
मख़लूक़	प्राणी	62
मजमूआ	संग्रह	45

उर्दू शब्द	अर्थ	पृष्ठ
मसरूफ़	व्यस्त	38
महमूद	सराहनीय	17
माह	चाँद	65
मिज़ाज	स्वभाव	22
मुख़तसर	संक्षिप्त	18
मुज़्तर	बेचैन	74
मुनाज़रा	बहस, वाद-विवाद	59
मुश्किल कुशा	संकटमोचन	53
मेयार	गुणवत्ता का स्तर / मानक	51
मेहर व मह	चाँद व सूरज	65
मैयत	मृतक / शव	74
मोहक़्क़िक़	शोधकर्ता	43
मौजूद	उपस्थित	59
रुखसार	चेहरा	65
वफ़ात	निधन	34
वस्फ़	विशेषता	65
वालिद	पिता	62
शमा	दीपक	65
शुब्हा	संदेह	51
शोहरत	प्रतिष्ठा	63
सुकून	आराम / शांत	48
हासिल	प्राप्त	63
हिबा	उपहार / भेंट	74

मर्कज़ फ़ज़्ले हक़ एकेडमी

विद्याऔर विवेक को फ़ैलाना और समाज को सांस्कृतिक पतन
और नैतिक विचलन से बचाना इस का मूल उद्देश्य है।

विभाग

शरीअत & अनुसंधान कॉलेज
तहफ़ीज़ुल कुरान स्कूल
मर्कज़ पब्लिक स्कूल
पुस्तकालय
बोर्डिंग मदरसा
मसाजिद
मकातिब
राहत & परोपकार कक्ष

इस मर्कज़ का विकास आप लोगों की उदारता भरी योगदान के बिना हरगिज़ संभव नही। हम आशा करते हैं कि आपका साथ हमेशा मर्कज़ को मिलता रहेगा।

Administrator

markaz
shaping a culture

MARKAZ FAZLE-HAQ ACADEMY
Model Village, Kanyapuram P.O, Wimberlyagunj,
Andman & Nicobar Islands, India-744206